हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

अनुराग, यौवन, रूप या धन से उत्पन्न नहीं होता।
अनुराग, अनुराग से उत्पन्न होता है। - प्रेमचंद

वर्ष 21 अंक 06

अप्रैल 01-15, 2018

वैशाख कृष्ण पक्ष

'विरोधकृत' नामक विक्रम सम्वत्

वि. सं. -2075

युगाब्द - 5120

संरक्षक मण्डल
श्री विष्णुहरि डालमिया

सम्पादक
मानवेन्द्र नाथ पंकज

परामर्शदाता
सर्वश्री
राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार

व्यवस्था - श्री दूधनाथ शुक्ल

मो. -09582555152

सज्जा - श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम,
प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152
011-26178992,
011-26103495
ईमेल-hinduvishwa@gmail.com

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए .....$ 50 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित
एक प्रति .....10 ₹
वार्षिक .....200 ₹
त्रिवर्षीय.....500 ₹
पंचवर्षीय .....800 ₹
दसवर्षीय.....1,500 ₹
पन्द्रह वर्षीय.....2,100 ₹

कुल पेज - 28

11 भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन की आवश्यकता

सम्पादकीय

सराहनीय निर्णय 04
बांग्लादेश में हिंदू समुदाय को जड़ से समाप्त करने का जारी है षड़यंत्र 05
राम मंदिर निर्माण के लिए अध्यादेश लाएं 06
राष्ट्रहित में राम सेतु को नष्ट नहीं करेगी सरकार 07
लन्दन : मंदी के बावजूद फलता-फूलता अन्त्यसंस्कार व्यवसाय.....08
लिंचिंग मामले में बीजेपी नेता समेत 11 'गौ रक्षकों' को उम्र कैद 09
जम्मू, कश्मीर, लद्दाख, गिलगित, बाल्टिस्तान भारत का अभिन्न अंग : डॉ. मोहन भागवत जी.....10
भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन की आवश्यकता 11
कौन हैं ब्राह्मण ?.....12
इन मुस्लिम देशों में हैं हिंदू मंदिर 13
अ.भा. प्रशिक्षण वर्ग 14
ग्वालियर में 7 दिवसीय राष्ट्रीय रामायण मेला.....15
सेवा शिविर 16
कुछ याद इन्हें भी कर लो... !.....17
श्रीनगर जेल बनी आतंकवादियों की भर्ती का अड्डा.....18
नमो राज में "अल्पसंख्यकों" की बल्ले-बल्ले.....19
जिंदादिली और जिजीविषा की प्रतिमूर्ति महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग 20
देश की जनसांख्यिकी बदले की जारी है कोशिश.....21
चीन ने भारत सीमा पर तैनात किए कॉम्बैट सिस्टम से लैस सैनिक.....22
राजमाता जिजाऊ भोसले 23
अल्पसंख्यक पत्रकारों को 5 हजार रुपये की मीडिया किट बांटेगी कर्नाटक सरकार 25
एफसीआरए जांच के दायरे में सोनिया गांधी के ट्रस्ट समेत 42 संगठन 26

मानवेन्द्र नाथ पंकज

सराहनीय निर्णय

कुछ माह पूर्व हिमाचल में नवनिर्वाचित सरकार ने शासन की बागडोर जयराम ठाकुर के नेतृत्व में सम्हाली थी। उसने गोवंश संवर्द्धन हेतु ऐतिहासिक निर्णय लेकर सराहनीय काम किया है। चुनावी वायदे कर भूल जाने वाले दौर में ऐसे निर्णय ताजी हवा का सुखद झोंका कहा जा सकता है। हिमाचल के साथ ही हरियाणा व उत्तराखण्ड सरकार की रचनात्मक कार्य की दिशा में आगे बढ़ने हेतु भूरि–भूरि प्रशंसा करता हूँ।

उत्तराखण्ड सरकार ने धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक के प्रारूप को स्वीकृति प्रदान की है। अब जबरन धर्म परिवर्तन कर या झूठ बोलकर शादी करना अपराध होगा। ध्यान रहे 20 नवम्बर, 2017 को नैनीताल उच्च न्यायालय के विद्वत न्यायमूर्ति ने एक निर्णय में इस विधेयक की आवश्यकता रेखांकित की थी। अब यह विधेयक विधानसभा में कानून बनाने के लिए लाया जाएगा।

गोवंश संवर्द्धन हेतु हरियाणा सेक्सड सीमन की अमेरिकी तकनीक पर 50 करोड़ रूपए खर्च करेगा। सेक्सड सीमन एक विशेष प्रकार का वीर्य है। सिर्फ बछिया पैदा करने के लिए इससे कुछ शुक्राणु निकाल दिए जाते हैं।

हिमाचल में सरकार गोसेवा आयोग का गठन करेगी। जो नीति निर्धारण से लेकर गायों के लिए विकास कार्यक्रम तैयार करेगा। मंदिरों के चढ़ावे का 15 फीसदी हिस्सा गोवंश पर खर्च किया जाएग। प्रत्येक शराब की बोतल पर एक रूपया टैक्स लगेगा जो गोवंश के नाम पर होगा। गोमूत्र आधारित उद्योग पर 50 फीसदी अनुदान लेकर गोसदन को एक रूपए पर पट्टा देने की घोषणा की गई है।

हिमाचल सरकार के निर्णय तो अति जनोपयोगी हैं; बशर्ते इसका क्रियान्वयन जमीनी धरातल पर हो सके। मंदिरों का चढ़ावा गैर हिन्दू ही नहीं अपितु गैर सनातनधर्मी हिन्दुओं की बजाय सनातन धर्मी हिन्दुओं के कल्याण, वैदिक पाठशाला व गोवंश के लिए किया जाना समय की माँग है। हिमाचल, हरियाणा व उत्तराखण्ड सरकारों का उक्त निर्णय हेतु अभिनन्दन!

राष्ट्रगान में बदलाव की मांग

कांग्रेस सांसद रिपुन बोरा द्वारा राष्ट्रगान में बदलाव की मांग करते हुए प्रस्तुत किए जा रहे निजी विधेयक में कहा गया है कि सिंध के स्थान पर उत्तर पूर्व शब्द राष्ट्रगान में डाला जाए। अपने प्रस्ताव में बोरा ने लिखा कि देश के पूर्व राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने 24 जनवरी, 1950 में कुछ शब्द और एक म्यूजिक सदन में पेश किया था, जिसे राष्ट्रगान कहा गया लेकिन वक्त के साथ हालात और नक्शा दोनों बदल गए हैं। इसलिए अब राष्ट्रगान

शेष पृष्ठ 09 पर....

बांग्लादेश में हिंदू समुदाय को जड़ से समाप्त करने का जारी है षड़यंत्र

तिरुवनंतपुरम (जेएनएन),12 मार्च। बांग्लादेश में हिंदू समुदाय लगातार सिमटता जा रहा है। 1947 में बांग्लादेश की करीब एक–तिहाई आबादी हिंदुओं की थी। लेकिन 2016 आते–आते देश की कुल आबादी में उनका प्रतिशत 33 से घटकर सात फीसद के करीब रह गया। अमेरिकी मानवाधिकार कार्यकर्ता और प्रोफसर रिचर्ड बेंकिन ने यहां भारतीय विचार केंद्र में अपने भाषण के दौरान ये बातें कहीं।

बच्चे और औरतें हैं निशाने पर

रिचर्ड ने कहा, बांग्लादेश में बड़े ही सुनियोजित तरीके से हिंदुओं का सफाया किया जा रहा है। खालिदा जिया और शेख हसीना के शासन में भी इसके खिलाफ कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। हिंदुओं को पूरी तरह से खत्म करने के लिए उनके बच्चों और औरतों को निशाना बनाया जा रहा है। रोज ही उनके गायब होने के मामले सामने आते हैं। समुदाय की सफाई में जुटे लोगों की मंशा है कि कोई हिंदू पैदा ना हो और नई पीढ़ी भी समाप्त हो जाए।

रिचर्ड का मानना है कि इससे निपटने के लिए खुद बांग्लादेशी हिंदुओं को आगे आना होगा। उन्हें कानूनी तरीके से अपने लिए एक रक्षा बल तैयार करना चाहिए। हालांकि, वहां कई हिंदू संगठन हैं लेकिन बांग्लादेशी माइनॉरिटी वाच के अलावा कोई भी इस दिशा में प्रयास नहीं कर रहा है। बेंकिन के अनुसार उन्होंने इस मसले पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की थी और उन्हें बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों से अवगत कराया था।

– सृष्टि वर्मा

(https://m.jagran.com)

महाराष्ट्र में इस्लाम की बढ़ती लोकप्रियता!

सहाफत (28 जनवरी) के अनुसार महाराष्ट्र में पिछले 43 महीनों में 1687 लोगों ने धर्मान्तरण किया है। धर्मान्तरण करने वालों में हिंदू सर्वाधिक हैं। इस बात की जानकारी सूचना के अधिकार के साथ प्राप्त हुई है। 1687 लोगों में से 1166 लोग हिंदू थे। जिन्होंने इस्लाम, ईसाई और बौद्ध धर्म स्वीकार किया जबकि 228 मुसलमान भी हिंदू बने। जिन मुसलमानों ने धर्मान्तरण किया उनमें से 87 प्रतिशत ने हिंदू धर्म स्वीकार किया।

जिन लोगों ने धर्मान्तरण किया उनमें 69 प्रतिशत हिंदू थे जिनमें से 57 प्रतिशत ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया। सूचना के अनुसार इस बात की पुष्टि की गई है कि इस्लाम धर्म अब भी लोगों में अधिक लोकप्रिय है। धर्मान्तरण करने वालों में से 44 प्रतिशत ने इस्लाम को स्वीकार किया जबकि 21 प्रतिशत लोगों ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया।

(भारत नीति प्रतिष्ठान, 15 फर.)

पश्चिम बंगाल में रोहिंग्या मुसलमानों का इस्तकबाल

अखबार मशरिक (16 जनवरी) के अनुसार पश्चिम बंगाल के 24 परगना जिला के कोलाड़ी गांव में रोहिंग्या मुसलमानों को बसाने के प्रयास तेज कर दिए गए हैं। 40 रोहिंग्या नागरिकों को इस गांव में बसाया गया है और उनका पूरा खर्च उठाया जा रहा है। जिन रोहिंग्या मुसलमानों को इन गांवों में बसाया गया है उनमें 21 वयस्क हैं और 11 बच्चे हैं। गांव वालों ने मिलकर इनके लिए आवास की व्यवस्था की है और ये लोग हाल में ही यहां पहुंचे थे।

इन रोहिंग्या मुसलमानों के आवास की व्यवस्था दो मुस्लिम संगठनों ने की है। इन रोहिंग्या मुसलमानों के पास संयुक्त राष्ट्र संघ के शरणार्थी कमीशन के दस्तावेज हैं। इनको बसाने का कार्य देश बचाओ सामाजिक कमेटी के अध्यक्ष हसन गाजी कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि इनके लिए आवास की व्यवस्था लोगों से चंदा एकत्रित करके की गई है। इस वक्त पश्चिम बंगाल में 4000 रोहिंग्या मुसलमान हैं जिनके पास कोई दस्तावेज नहीं है। इन शरणार्थियों को गर्म कपड़े और चिकित्सा सुविधा दी गई है। ये लोग बांग्लादेश के रास्ते कोलाड़ी गांव में पहुंचे थे। शाहिद इस्लाम नामक एक व्यक्ति ने बताया कि वे यहां सुरक्षित हैं और गांव वाले उनकी पूरी सहायता कर रहे हैं। उनके लिए रोजगार की व्यवस्था की गई है ताकि वे आत्मनिर्भर हो सकें और इनके बच्चों को मदरसों में भर्ती किया गया है।

गाजी ने दावा किया कि जो भी रोहिंग्या मुसलमान भारत में भटक रहे हैं उन्हें हम पुनर्वास की पूरी सुरक्षा देंगे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी रोहिंग्या मुसलमानों को भारत से निष्कासित करने के खिलाफ हैं।

(भारत नीति प्रतिष्ठान, 15 फर.)

राम मंदिर निर्माण के लिए अध्यादेश लाएं

- सुब्रमण्यन स्वामी

नई दिल्ली। राज्यसभा सांसद और बीजेपी नेता सुब्रमण्यन स्वामी ने एक बार फिर राम मंदिर निर्माण का मुद्दा उठाया है। स्वामी ने इसे लेकर पीएम मोदी को एक खत लिखा है जिसमें कहा है कि कांग्रेस से प्रभावित वकील अपने अजेंडे के तहत इस केस में अड़ंगा डाल रहे हैं। ऐसे में स्वामी ने पीएम मोदी से संविधान और कानून को हथियार बनाने की बात कहते हुए इसपर अध्यादेश लाने की मांग की है।

उन्होंने रामजन्मभूमि के ओनरशिप पर सरकार से अध्यादेश की मांग की है। स्वामी ने लिखा है कि सरकार रामजन्मभूमि जमीन के मालिकाना हक पर अध्यादेश ला सकती है। स्वामी ने कहा है कि इसपर अध्यादेश के जरिए कानून बनाकर जमीन को आगम शास्त्र में निपुण धर्मगुरुओं के संगठन को सौंपा जाए, ताकि राम मंदिर का निर्माण हो सके। फिलहाल सुप्रीम कोर्ट में अयोध्या विवाद पर अंतिम सुनवाई चल रही है। आपको बता दें कि आगम शास्त्र हिंदू धर्म के पूजा–पाठ, मंदिर निर्माण, अनुष्ठान के नियमों का एक संकलन है।

स्वामी के इस खत के बाद एक बार फिर बाबरी विवाद और रामजन्मभूमि मामले के तूल पकड़ने की आशंका है। स्वामी ने अपने खत में लिखा है कि कानून बनने की स्थिति में जमीन के मालिकाना हक पर दावा जताने वाले दूसरे पक्षों को हुए नुकसान की क्षतिपूर्ति के लिए मुआवजा दिया जा सकता है।

स्वामी ने लगे हाथ कांग्रेस पर भी निशाना साधा है। स्वामी ने लिखा है कि कांग्रेस से प्रभावित वकील इस केस की प्रगति में अड़ंगा डालने के अजेंडे पर चल रहे हैं।

पिछले साल 26 फरवरी को बीजेपी नेता सुब्रमण्यन स्वामी को इस मामले में पक्षकार बनाया गया था। स्वामी ने राम मंदिर निर्माण के लिए याचिका दायर की थी। स्वामी का दावा है कि इस्लामिक देशों में किसी सार्वजनिक स्थान से मस्जिद को हटाने का प्रावधान है और उसका निर्माण कहीं और किया जा सकता है। मामले में मुख्य पक्षकार हिंदू महासभा, सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड आदि हैं। (18 मार्च)

(navbharattimes.indiatimes.com)

पहले होगी मस्जिद पर बहस

माला दीक्षित, नई दिल्ली। अयोध्या में राम जन्मभूमि पर मलिकाना हक के मुकदमे में पहले मस्जिद पर बहस होगी। सुप्रीम कोर्ट विचार करेगा कि नमाज के लिए मस्जिद को इस्लाम का जरूरी हिस्सा न बताने वाले इस्माइल फारुकी के फैसले पर पुनर्विचार की जरूरत है कि नहीं। मुस्लिम पक्षकारों ने फैसले में दी गई व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए मामले को पुनर्विचार के लिए बड़ी पीठ को भेजे जाने की मांग की है।

सुप्रीम कोर्ट की पांच न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने 1994 में अयोध्या में भूमि अधिग्रहण को चुनौती देने वाले डाक्टर एम. इस्माइल फारुकी के मामले में 3–2 के बहुमत से दी गई व्यवस्था में कहा है कि नमाज के लिए मस्जिद इस्लाम धर्म का अभिन्न हिस्सा नहीं है। मुसलमान कहीं भी नमाज अदा कर सकते हैं। यहां तक कि खुले में भी नमाज अदा की जा सकती है। ये बात फैसले के पैराग्राफ 82 में कही गई है। मुस्लिम पक्षकार एम. सिद्दीकी के वकील राजीव धवन ने गत 5 दिसंबर को इस फैसले पर सवाल उठाते मामला पुनर्विचार के लिए संविधानपीठ को भेजे जाने की मांग की थी।

मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा, अशोक भूषण और एस. अब्दुल नजीर की पीठ ने राम जन्मभूमि विवाद पर सुनवाई शुरु करते हुए धवन से कहा कि वे पहले इस्माइल फारुकी के फैसले पर पुनर्विचार की मांग पर सुनवाई करेंगे। वे कोर्ट को संतुष्ट करें कि फैसले में दी गई व्यवस्था संवैधानिक प्रावधानों के खिलाफ और उस पर पुनर्विचार की जरूरत है। अगर कोर्ट को जरूरी लगा

पूजा–अर्चना के मौलिक अधिकार की मांग पर अलग से होगा विचार

रामजन्मभूमि मामले में सुनवाई के दौरान जब जब सुब्रमण्यम स्वामी की हस्तक्षेप अर्जी का नंबर आया तो स्वामी ने कहा कि उन्होंने रिट याचिका दाखिल कर राम जन्मभूमि में पूजा अर्चना का मौलिक अधिकार मांगा था। उनका पूजा अर्चना का मौलिक अधिकार संपत्ति के अधिकार से ऊपर है। इसलिए कोर्ट को अयोध्या जन्मभूमि विवाद मामले में उनकी अर्जी पर सुनवाई करनी चाहिए। स्वामी ने कहा कि एक अन्य पीठ ने उनकी रिट याचिका को वापस लेने की अनुमति देते हुए उन्हें इस मुख्य मामले में हस्तक्षेप अर्जी दाखिल करने की इजाजत दी थी। इस पर कोर्ट ने कहा कि वे पक्षकारों के अलावा किसी की भी हस्तक्षेप अर्जी पर सुनवाई के इच्छुक नहीं है। इसलिए इस अर्जी पर भी सुनवाई नहीं करेंगे। हालांकि इसके बदले उनकी मुख्य रिट याचिका पुनर्स्थापित की जाती है और उस याचिका पर उचित पीठ कानून के मुताबिक सुनवाई करेगी। नई दिल्ली, 14 मार्च।

(https://m.jagran.com)

केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट से कहा

राष्ट्रहित में राम सेतु को नष्ट नहीं करेगी सरकार

नई दिल्ली, 16 मार्च, 2018 (आईएएनएस)। केंद्र सरकार ने शुक्रवार को सर्वोच्च न्यायालय को बताया कि उसने भारत के पूर्वी और पश्चिमी तटों के बीच नौवहन को सुगम बनाने के लिए शुरु की गई सेतुसमुद्रम् परियोजना के लिए राम सेतु को राष्ट्रहित में नष्ट नहीं करेगी। केंद्रीय जहाजरानी मंत्रालय की ओर से प्रधान न्यायाधीश दीपक मिश्रा, न्यायमूर्ति ए. एम. खानविलकर और न्यायमूर्ति डी. वाई. चंद्रचूड़ को सूचित किया गया कि उसने पूर्व की सेतुसमुद्रम् समुद्री मार्ग परियोजना का विकल्प तलाशने का फैसला किया है। केंद्र ने अदालत में दाखिल एक हलफनामे में कहा, "भारत सरकार राष्ट्रहित में रामसेतु को बगैर क्षति पहुंचाए पूर्व की सेतुसमुद्रम समुद्री मार्ग परियोजना का विकल्प ढूंढना चाहती है।"

तो मामला पुनर्विचार के लिए पांच जजों की संविधान पीठ को भेजा जा सकता है। इसके बाद धवन ने फारुकी के फैसले को गलत ठहराने वाली दलीलें देनी शुरू की।

हस्तक्षेप अर्जियां खारिज

सुप्रीम कोर्ट ने राम जन्मभूमि मामले में पक्ष रखने का हक मांगने वाली सभी हस्तक्षेप अर्जियां और मामले में सुलह के बिंदु पेश करने का दावा करने वालों की मांग ठुकरा दी। कोर्ट ने सभी अर्जियां खारिज कर दीं। (14मार्च)

(https://m.jagran.com)

सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता पिंकी आनंद केंद्र की ओर उपस्थित हुई थी। उन्होंने कहा कि सेतुसमुद्रम् परियोजना के विरुद्ध भारतीय जनता पार्टी के नेता सुब्रह्मण्यम स्वामी की जनहित याचिका (पीआईएल) को अब खारिज किया जा सकता है। स्वामी ने पीआईएल दाखिल करते हुए कहा था कि राम सेतु को क्षति नहीं पहुंचाना चाहिए।

(https://www.jansatta.com)

धनकुबेरों और गरीबों को कर्ज देने के लिए अलग- अलग मानदंड क्यों : मद्रास उच्च न्यायालय

चेन्नई, 24 फरवरी 2018 । मद्रास हाईकोर्ट ने करोड़पतियों एवं धनकुबेरों और मध्यम वर्ग व गरीबों को कर्ज देने के लिए अलग–अलग मानदंड अपनाने पर बैंकों को फटकार लगाई है। हाईकोर्ट ने कहा कि पैसे वालों को पर्याप्त जमानत के बिना कर्ज दे दिया जाता है। बैंक करोड़पति बिजनेसमैन और धनकुबेरों को कर्ज और लेटर ऑफ अंडरस्टैंडिंग अपर्याप्त जमानत के ही दे देते हैं। उनसे रिकवरी की कार्रवाई तब की जाती है, जब कोई घोटाला नियंत्रण से बाहर हो जाता वहीं बैंक मध्यम आय वर्ग के लोगों एवं गरीबों के मामले में बिल्कुल अलग मानदंड अपनाते हैं।

जस्टिस केके शशिधरन और पी. वेलमुरुगन की पीठ ने तमिलनाडु के एक पिछड़े समुदाय की लड़की को शिक्षा का कर्ज देने से इनकार करने के लिए इंडियन ओवरसीज बैंक पर 25,000 का जुर्माना लगाया है। बैंक ने इस गरीब किसान की बेटी के शिक्षा कर्ज के आवेदन पर विचार करने के एकल पीठ के फैसले के खिलाफ अपील की थी। पीठ ने कहा, बैंक केंद्र सरकार और रिजर्व बैंक के निर्देशों को लेकर सजग नहीं हैं, जिनमें साफ कहा गया है कि गरीब छात्रों को शिक्षा के लिए कर्ज देकर उनकी मदद की जानी चाहिए। दंडित न किए जाने के कारण बैंक ऐसे निर्देशों का उल्लंघन कर रहे हैं।

पीठ ने कहा, यह मामला इस बात का उदाहरण है कि कैसे इंडियन ओवरसीज बैंक ने तमिलनाडु के अति पिछड़े समुदाय की एक लड़की को 3.45 लाख रुपये का शिक्षा कर्ज देने के लिए इधर–उधर दौड़ाया। इस मामले में 30 नवंबर, 2012 के हाईकोर्ट की एकल पीठ के फैसले को बैंक ने चुनौती दी थी।

पीठ ने यह भी कहा कि बैंकों के पास ऐसा कोई मामला नहीं है जिसमें शिक्षा कर्ज लेने वाला फंसे हुए लोन में शामिल हिस्सेदार हो। हमारे संज्ञान में लाया गया है कि 50 कंपनियों में प्रत्येक पर 250 करोड़ रुपये की देनदारी है। ये सभी विलफुल डिफॉल्टर हैं। बैंक की अपील खारिज करते हुए कोर्ट ने आवेदनकर्ता को दो हफ्ते के भीतर 25,000 रुपये चुकाने को कहा है।

(https://www.amarujala.com)

आज यदि हम अपने अंतिम संस्कार के लिए कोई निश्चित रकम बैंक में जमा करते हैं, तो पांच, दस या 15 वर्ष तक उसका मूल्य वही नहीं रहेगा, जबकि उस समय तक अंतिम संस्कार पर होने वाले व्यय में निश्चित ही दोगुनी–तिगुनी वृद्धि हो चुकी होगी।

लन्दन : मंदी के बावजूद फलता-फूलता अन्त्यसंस्कार व्यवसाय

महेंद्र राजा जैन

इस बार लंदन आने पर डाक में कुछ ऐसी कंपनियों के ब्रोशर भी मिले, जिनमें आशा की गई थी कि हम अपने अंतिम संस्कार के लिए अभी से कुछ व्यवस्था करेंगे। वस्तुतः यह मंदी की मार का ही असर है कि यहां लोगों ने आजीविका के नए–नए रास्ते खोज निकाले हैं। लोग भी महंगाई से ऐसा त्रस्त हैं कि उन्हें भरोसा नहीं कि मृत्यु के बाद परिवारीजन उनका अंतिम संस्कार ठीक से कर पाएंगे! जनाजा शान से निकलने की उम्मीद में वे इन कंपनियों में अपनी जमा–पूंजी लगाकर निश्चिंत हो जाना चाहते हैं।

कंपनियों का दावा है कि पांच, दस या 15 वर्ष बाद महंगाई चाहे जितनी बढ़े, वे आज के रेट पर ही उस समय आपसे हुए करार के मुताबिक आपका अंतिम संस्कार करेंगी और इसके लिए परिजनों को केवल इतना करना पड़ेगा कि वे आपकी मृत्यु की सूचना कंपनी को दे दें। उन्हें और किसी प्रकार की दौड़–धूप या आर्थिक चिंता नहीं करनी होगी।

ब्रोशर में इस बात पर विशेष जोर है कि आज यदि हम अपने अंतिम संस्कार के लिए कोई निश्चित रकम बैंक में जमा करते हैं, तो पांच, दस या 15 वर्ष तक उसका मूल्य वही नहीं रहेगा, जबकि उस समय तक अंतिम संस्कार पर होने वाले व्यय में निश्चित ही दोगुनी–तिगुनी वृद्धि हो चुकी होगी।

अंतिम संस्कार की इस प्री–पेड योजना में तरह–तरह के पैकेज हैं, जिनमें हर तरह के खर्च शामिल रहते हैं। आप चाहें, तो सबसे सस्ता पैकेज ले सकते हैं, जिसमें केवल यह गारंटी रहती है कि आपकी मृत्यु की सूचना मिलने पर 24 घंटे के अंदर आपके परिवारजनों की इच्छानुसार जल्दी से जल्दी अंतिम संस्कार की व्यवस्था हो जाएगी। डीलक्स पैकेज भी है, जिसमें आपके शव को 'पांच सितारा' सुविधाएं मिलेंगी और जिसका शुल्क 3,000 पौंड (लगभग तीन लाख रुपये) है।

इसमें अंतिम संस्कार के संबंध में 'विशेषज्ञ' द्वारा सभी प्रकार की गाइडेंस, नगरपालिका के रजिस्टर में लेखा–जोखा दर्ज कराकर आपके द्वारा नामित व्यक्ति को रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट सौंपना, मृत्यु–स्थल यानी निवास या अन्य किसी जगह से, जहां आपकी मृत्यु हुई हो, कंपनी के कार्यालय तक आपके शव को ले जाने की व्यवस्था (यह दूरी 20 मील से अधिक नहीं होनी चाहिए), मृत्यु का डॉक्टरी प्रमाणपत्र, मृतक के अंतिम संस्कार होने तक कंपनी के 'गोदाम' में शव की देख–भाल (कभी–कभी शव को आठ–दस दिनों तक यानी तब तक रखा जाता है, जब तक मृतक के परिवारजन जरूरी कार्यो से निवृत्त होकर मृतक के संस्कार के लिए समय न निकाल लें)।

अंतिम संस्कार के विधि–विधान से लेकर दाह संस्कार के बाद मित्रों को भेजा जाने वाला 'थैंक यू' कार्ड भी इसमें शामिल होता है। इसके अलावा भी तमाम सुविधाएं हैं, जिनकी मृत्युपरांत संबंधियों को जरूरत पड़ती हैं। यदि आप 'बीमा शुल्क' (यह एक प्रकार का बीमा ही है) एकमुश्त नहीं दे सकते, तो एक वर्ष तक मासिक किस्तों में या पांच वर्ष तक 60 मासिक किस्तों में भी दे सकते हैं। 12 किस्तों में देने पर कोई अतिरिक्त शुल्क यानी ब्याज नहीं देना पड़ेगा, पर पांच वर्ष में भुगतान करने पर लगभग 500 सौ पौंड यानी करीब 50 हजार रुपये अतिरिक्त देना होगा।

पैकेज लेने वालों को कंपनी गारंटी देती है कि आपकी मृत्यु के बाद आपके संबंधियों को कंपनी को आपकी मृत्यु की सूचना देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करना होगा, यानी आर्थिक दृष्टि से तो वे निश्चिंत रहेंगे ही, किसी भी प्रकार की दौड़–धूप से भी बचे रहेंगे। हमारे पास मृतकों के अंतिम संस्कार के लिए कंपनी द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं का जो विवरण आया है, उसमें यह भी बताया गया है कि यदि हम पत्र मिलने के बाद 28 दिन के अंदर रजिस्ट्रेशन करा लेते हैं, तो शुल्क में 50 पौंड (लगभग 5,000 रुपये) की छूट भी मिलेगी।

पैकेज में केवल दाह संस्कार का व्यय शामिल है। यदि हम शव दफन कराना चाहते हैं, तो उसके लिए लगभग 500 पौंड अतिरिक्त देना होगा, पर इसमें जमीन यानी जहां शव दफन किया जाएगा, उसका शुल्क शामिल नहीं है। जमीन का शुल्क अलग–अलग क्षेत्र के अनुसार 500 से लेकर 3,000 पौंड तक हो सकता है।

लेखक वरिष्ठ हिंदी लेखक हैं और ये उनके अपने विचार हैं

(हिंदुस्तान 28 फरवरी, 2018)

सुभाषित

नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयान्न चान्यायेन पृच्छतः।
जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोक आचरेत्।।

बुद्धिमान व्यक्ति बिना पूछे किसी को ज्ञान न दे और विधिपूर्वक न पूछे जाने पर भी मौन रहे; सब कुछ जानते हुए भी वह अज्ञानी के समान आचरण करे।

(मनुस्मृति)

पश्चिम बंगाल : सिविल सेवा परीक्षा में ४० फीसदी मुस्लिम उम्मीदवार सफल

कोलकाता। पश्चिम बंगाल सिविल सर्विस (एग्जिक्यूटिव) परीक्षा में 321 अभ्यर्थियों में चार मुस्लिम महिला उम्मीदवारों सहित 40 फीसदी मुस्लिम उम्मीदवारों ने परीक्षा में सफलता हासिल की है। ये कोई पहला मौका नहीं है जब मुस्लिम उम्मीदवार इतनी बड़ी संख्या में सफल रहे हैं। इससे पहले भी आईएएस की परीक्षा में मुस्लिम उम्मीदवारों ने अच्छी रैंकिंग भी हासिल की है।

राज्य प्रशासनिक पदानुक्रम के तहत उन्हें विभिन्न पदों पर नियुक्त किया जाएगा। उनमें से 5 को संयुक्त ब्लॉक विकास अधिकारी के पद के लिए चुना गया है। यह परीक्षा करीब 90 प्रतिशत मुस्लिम उम्मीदवारों ने पास की है। 33 को ओबीसी ए श्रेणी के तहत चुना गया है जबकि ओबीसी बी श्रेणी में केवल एक मुस्लिम उम्मीदवार का चयन किया गया है। (20 मार्च)

(bharatdustak.com)

मंदिर के पास २५ करोड़ के पुराने नोट

तिरुपति, 15 मार्च 2018। तिरुमला में भगवान वेंकटेश्वर की मशहूर पहाड़ी मंदिर ने चलन से बाहर 500 और 1,000 रुपए के करीब 25 करोड़ रुपए जमा है। मंदिर ने नोट बदलने के लिए रिजर्व बैंक को पत्र लिखा है।

मंदिर के एक अधिकारी ने बताया कि श्रद्धालुओं ने दान पत्र में 1,000 और 500 रुपए के चलन से बाहर पुराने नोट डाले है। आठ नवंबर 2016 को केन्द्र सरकार द्वारा नोटों पर प्रतिबंध लगाने के बाद कुछ महीनों में यह राशि एकत्र हुई है। (भाषा)

लिंचिंग मामले में बीजेपी नेता समेत ११ 'गौ रक्षकों' को उम्र कैद

झारखंड में रामगढ़ स्थित फास्ट ट्रैक कोर्ट ने एक युवक अलीमुद्दीन की हत्या (मॉब लिंचिंग) के मामले में 11 कथित गौ–रक्षकों को उम्र कैद की सजा सुनाई है। इन लोगों ने 'गाय का मांस' ले जाने के शक में अलीमुद्दीन को पीट–पीट कर मार डाला था। इससे पहले 16 मार्च को इन अभियुक्तों को दोषी करार दिया गया था।

जिन अभियुक्तों को ये सजा सुनाई गई है उनमें बीजेपी नेता नित्यानंद महतो के अलावा मुख्य अभियुक्त के तौर पर दोषी करार दिए गए दीपक मिश्रा, छोटू वर्मा और संतोष सिंह भी शामिल हैं। फैसले को लेकर रामगढ़ सिविल कोर्ट में दिनभर हलचल बनी रही। साथ ही प्रशासन ने सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए थे।

bbc.com/hindi, 20 March

अल्पसंख्यक आयोग अध्यक्ष का शिगूफा,

बैंकों में अल्पसंख्यकों के लिए बनें अलग काउंटर

केंद्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष गयरुल हसन रिजवी ने माइनॉरिटी के लिए बैंकों में महिलाओं की तरह अलग से काउंटर बनाए जाने की बात कही। उन्होंने प्रदेश के सभी प्रमुख बैंकरों के साथ विभूति खंड स्थित बड़ौदा हाउस में बैठक की। इसमें उन्होंने अल्पसंख्यकों को दिए जाने वाले लोन का हाल जाना। शेष पृष्ठ 26 पर...

पृष्ठ 04 का शेषांश....

में संशोधन करने की आवश्यकता है। बिल में कहा गया कि हमेशा भारत के खिलाफ जहर उगलने वाले पाकिस्तान के भूभाग (सिंध) के नाम को राष्ट्रगान से हटा देना चाहिए।

राष्ट्रगान में संशोधन की मांग कर रह–रहकर उठती रहती है। मान. न्यायालय इसे खारिज कर चुके हैं। परन्तु श्री बोरा के प्रस्ताव में कांग्रेस कुचक्र से पर्दा उठाया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान राष्ट्रगान की अनुशंसा किसी समिति या निकाय ने नहीं अपितु दुर्घटनावश हिन्दू बनने वाले तत्कालीन प्रधानमंत्री के राज में दुर्घटनावश राष्ट्रगान वर्तमान राष्ट्रगान हो गया।

ध्यान रहे गुरुदेव ने मूलगीत की रचना बांग्ला भाषा में की थी। मूल गीत में पांच अनुच्छेद हैं। जिनमें से पहले अनुच्छेद के अनूदित पद को राष्ट्रगान घोषित कर दिया गया। 'हिन्दू विश्व' के सम्पादकीय में वंदे मातरम् के सम्मान हेतु केन्द्रीय कानून बनाने की मांग पहले भी की जा चुकी है।

कांग्रेस सांसद रिपुन बोरा के रहस्योद्घाटन को दृष्टिगत रखते हुए मेरी केन्द्र सरकार से पुरजोर माँग है कि वर्तमान राष्ट्रगान के स्थान पर सम्पूर्ण वंदेमातरम गीत को राष्ट्रगान घोषित करने हेतु केन्द्रीय कानून बनाया जाए।

(20 मार्च, 2018)

जम्मू, कश्मीर, लद्दाख, गिलगित, बाल्टिस्तान भारत का अभिन्न अंग :डॉ.मोहन भागवत जी

नागपुर 15 मार्च। नागपुर में सप्तसिंधु जम्मू कश्मीर लद्दाख महा उत्सव का उद्घाटन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने करते हुए कहा जम्मू कश्मीर लद्दाख गिलगित बाल्टिस्तान भारत का अविभाज्य अंग है। हम एक हैं, एक थे और एक रहेंगे।

भागवत ने कहा कि हम सभी भारतीय एक हैं। उन्होंने कहा कि लोग नहीं जानते कि जम्मू– कश्मीर में कोई आचार्य अभिनवगुप्त हो गए जो शैव मत के प्रणेता थे। शैव मत को मानने वाले सभी एक हैं लेकिन इसमें भी लोग बांटने की कोशिश करते हैं। कुछ लोगों के चलते भारत को बांटने की साजिशें चलती रहती हैं, लेकिन वो कामयाब नहीं हो पाते।

अगर हम एक नहीं होते तो जम्मू–कश्मीर में जब पाकिस्तान के कबाइलियों ने हमला किया तो उस वक्त कुशोक बकुला 'नुब्रा आर्मी' का गठन क्यों करते? इसलिए हम सभी एक ही हैं।

उन्होंने कहा कि पूरे भारत में दर्शन की पद्धति चलती है और जो घाटी में भी चलती है। श्रीनगर में लगा श्री शब्द इसका परिचायक है। शक्ति और भक्ति के साथ ऐसी युति खड़ी हो जिससे ये संदेश जाए कि सब अपने हैं। जम्मू कश्मीर स्टडी सेंटर ने अध्ययन करके आचार्य अभिनवगुप्त, कुशक बकुला और राज्य संस्कृति को आम जनमानस तक पहुंचाने का बड़ा कार्य किया है।

मिजोरम के राज्यपाल निर्भय शर्मा ने कहा कि गिलगित– बाल्टिस्तान की अहमियत को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। जम्मू कश्मीर के ऐतिहासिक तथ्यों पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि सम्राट अशोक ने ही श्रीनगर शहर का

३५ए संवैधानिक धोखा: डीके दुबे

नागपुर,16 मार्च। सप्तसिंधु महोत्सव के दूसरे दिन जम्मू कश्मीर लद्दाख के अलग–अलग विषयों पर अलग–अलग समानांतर सेमिनार आयोजित हुए। जिसमें देशभर से आए विद्वानों ने अपने–अपने विचार रखे। इसी कड़ी में सुबह हंसापुरी के किदवई हाई स्कूल के बच्चों से जम्मू कश्मीर के वि.प. सदस्य मुखातिब हुए। उन्होंने स्कूली बच्चों को जम्मू कश्मीर की जमीनी हकीकत से रूबरू करवाया। उन्होंने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मीडिया में जो छवि कश्मीर की दिखाई जाती है वो इमेज एक एरिया विशेष की है जबकि पूरी वैली का युवा अच्छी जिंदगी जीना चाहता है।

दोपहर 2 बजे डॉ. अम्बेडकर विधि महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में सुप्रीमकोर्ट के वकील और जम्मू कश्मीर स्टडी सेंटर की लीगल टीम के वरिष्ठ सदस्य दिलीप कुमार दुबे ने बताया कि जम्मू कश्मीर में धारा 370 का प्रावधान अस्थाई रूप से किया गया था और धारा 370 राज्य को स्पेशल राज्य का दर्जा नहीं देता है क्योंकि 370 के प्रावधान लाते समय संविधान के अध्याय–21 में स्पेशल शब्द ही नहीं था।

उन्होंने बताया कि पूरे देश में एक रणनीति के तहत मिथ का प्रचार किया गया। साथ ही उन्होंने कहा कि आर्टिकल 35ए भारतीय जनता के साथ संवैधानिक धोखा है। आर्टिकल 35ए ने जम्मू कश्मीर की जनता को मौलिक अधिकारों से वंचित कर दिया है जिसमें पाकिस्तान से आए शरणार्थी, महिलाएं, दलित, आदिवासी शामिल हैं यहां तक कि सफाई कर्मचारियों के बच्चे पीएचडी करने के बावजूद राज्य में 35ए की वजह से किसी भी प्रकार की नौकरी से वंचित हैं और वो केवल सफाई कर्मचारी का काम ही कर सकते हैं। हमारे देश में जहां दलित उत्थान के लिए आंदोलन चल रहे हों वहीं जम्मू कश्मीर राज्य में सफाई कर्मचारी(दलित) आज भी संवैधानिक रूप से गंदगी साफ करने के लिए मजबूर हैं चाहे वो कितना ही क्यों ना पढ़ लिख जाएं।

दोपहर में ही पाली प्राकृत विभाग नागपुर विद्यापीठ में 'कुशोक बकुला और बुद्धिजम'पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री जवाहर लाल कौल ने कुशोक बकुला के योगदान को याद करते हुए कहा कि पूरी दुनिया में शांति के प्रयासों में कुशोक बकुला का नाम सबसे आगे रहा है। जब–जब शांति के प्रयासों की चर्चा की जाएगी, तब तब कुशोक बकुला का नाम बड़ी ही श्रद्धा के साथ लिया जाएगा। उनके चाहने वाले पूरी दुनिया में हैं।

नाम दिया था। जम्मू–कश्मीर के बच्चों के मन में भारत के प्रति नफरत के बीज बोये जा रहे हैं और ऐसा नहीं होना चाहिए था। साथ ही मिजोरम के राज्यपाल ने जम्मू कश्मीर में सेना में बिताए अपने 20 बरस याद करते हुए कई रोचक प्रसंग सुनाए। निर्भय शर्मा ने कहा कि जम्मू कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है।

सप्तसिंधु जम्मू–कश्मीर लद्दाख महोत्सव में चार यात्राओं का शुभारंभ किया गया जो देश के अलग–अलग हिस्सों में जाकर कुशोक बकुला के विचारों से लोगों को अवगत कराएंगी। 19 मई को लेह में जाकर ये यात्राएं सम्पन्न होगी।

इससे पूर्व संघ प्रमुख मोहन भागवत ने सप्तसिंधु जम्मू–कश्मीर लद्दाख महा उत्सव की प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में जम्मू कश्मीर लद्दाख के महापुरुषों के जीवन, पर्यटन स्थल और धार्मिक आध्यात्मिक स्थल और संस्कृति को दर्शाते हुए कलाकृतियां दर्शायी गई हैं। आचार्य अभिनवगुप्त, शैव दर्शन, खूबसूरत वादियां और कुशोक बकुला पर दर्शायी गईं कलातियां लोगों का मन मोह रही हैं।

जवाहर लाल कौल ने कश्मीर में सम्राट ललितादित्य के योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि ललितादित्य खुद वैष्णव थे। इसके बावजूद जब उन्होंने कन्नौज के राजा को हराया तो उसके बदले में शैव मत के विद्वान आचार्य अभिनवगुप्त को वहां के राजा से मांगा, इसके बाद ही ललितादित्य अपने साथ आचार्य अभिनवगुप्त को लेकर जम्मू कश्मीर गए। ललितादित्य ने आचार्य अभिनवगुप्त के अध्ययन और रहने की व्यवस्था करायी। इसके बाद ही आचार्य अभिनवगुप्त के शैव दर्शन पर दिए गए सूत्र आज पूरी दुनिया में प्रचलित हो सके हैं। jkscmedia@gmail.com

भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन की आवश्यकता

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह मानना है कि देश की विविध भाषाओं तथा बोलियों के संरक्षण और संवर्द्धन के लिये सरकारों, अन्य नीति निर्धारकों और स्वैच्छिक संगठनों सहित समस्त समाज को सभी सम्भव प्रयास करने चाहिये। इस हेतु निम्नांकित प्रयास विशेष रूप से करणीय हैं–

देश भर में प्राथमिक शिक्षण मातृभाषा या अन्य किसी भारतीय भाषा में ही होना चाहिये। इस हेतु अभिभावक अपना मानस बनायें तथा सरकारें इस दिशा में उचित नीतियों का निर्माण कर आवश्यक प्रावधान करें।

तकनीकी और आयुर्विज्ञान सहित उच्च शिक्षा के स्तर पर सभी संकायों में शिक्षण,

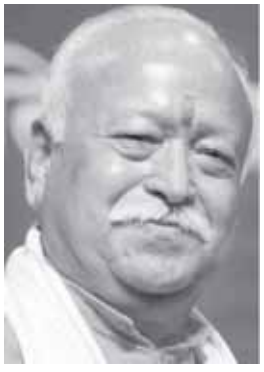

पाठ्य सामग्री तथा परीक्षा का विकल्प भारतीय भाषाओं में भी सुलभ कराया जाना आवश्यक है।

पात्रता व प्रवेश परीक्षा (नीट) एवं संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाएँ भारतीय भाषाओं में भी लेनी प्रारम्भ की गयी हैं, यह पहल स्वागत योग्य है। इसके साथ ही अन्य प्रवेश एवं प्रतियोगी परीक्षाएँ, जो अभी भारतीय भाषाओं में आयोजित नहीं की जा रही हैं, उनमें भी यह विकल्प सुलभ कराया जाना चाहिये। सभी शासकीय तथा न्यायिक कार्यों में भारतीय भाषाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिये। इसके साथ ही शासकीय व निजी क्षेत्रों में नियुक्तियों, पदोन्नतियों तथा सभी प्रकार के कामकाज में अंग्रेजी भाषा की प्राथमिकता न रखते हुये भारतीय भाषाओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिये।

स्वयंसेवकों सहित समस्त समाज को अपने पारिवारिक जीवन में वार्तालाप तथा दैनन्दिन व्यवहार में मातृभाषा को प्राथमिकता देनी चाहिये। इन भाषाओं तथा बोलियों के साहित्य–संग्रह व पठन–पाठन की परम्परा का विकास होना चाहिये। साथ ही इनके नाटकों, संगीत, लोककलाओं आदि को भी प्रोत्साहन देना चाहिये।

पारंपरिक रूप से भारत में भाषाएँ समाज को जोड़ने का साधन रही हैं। अतः सभी को अपनी मातृभाषा का स्वाभिमान रखते हुए अन्य सभी भाषाओं के प्रति सम्मान का भाव रखना चाहिये।

केन्द्र व राज्य सरकारों को सभी भारतीय भाषाओं, बोलियों तथा लिपियों के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु प्रभावी प्रयास करने चाहिये।

अ. भा. प्रतिनिधि सभा बहुविध ज्ञान को अर्जित करने हेतु विश्व की विभिन्न भाषाओं को सीखने की समर्थक है। लेकिन, प्रतिनिधि सभा भारत जैसे बहुभाषी देश में हमारी संस्कृति की संवाहिका, सभी भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन को परम आवश्यक मानती है। प्रतिनिधि सभा सरकारों, स्वैच्छिक संगठनों, जनसंचार माध्यमों, पंथ–संप्रदायों के संगठनों, शिक्षण संस्थाओं तथा प्रबुद्धवर्ग सहित संपूर्ण समाज से आह्वान करती है कि हमारे दैनन्दिन जीवन में भारतीय भाषाओं के उपयोग एवं उनके व्याकरण, शब्द चयन और लिपि में परिशुद्धता सुनिश्चित करते हुये उनके संवर्द्धन का हर सम्भव प्रयास करें।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ–अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा, युगाब्द 5119
रेशिमबाग नागपुर, फाल्गुन कृष्ण 8–9 युगाब्द 5119 (9–11 मार्च 2018)

(http://rss.org, 10 March)

कौन हैं ब्राह्मण?

अनिरुद्ध जोशी

प्राचीन काल में हर जाति, समाज आदि का व्यक्ति ब्राह्मण बनने के लिए उत्सुक रहता था। ब्राह्मण होने का अधिकार सभी को आज भी है। चाहे वह किसी भी जाति, प्रांत या संप्रदाय से हो वह गायत्री दीक्षा लेकर ब्राह्मण बन सकता है, लेकिन ब्राह्मण होने के लिए कुछ नियमों का पालन करना होता है। हम उस ब्राह्मण समाज की बात नहीं कर रहे हैं जिनमें से अधिकतर ने अपने ब्राह्मण कर्म छोड़कर अन्य कर्मों को अपना लिया है। हालांकि अब वे ब्राह्मण नहीं रहे लेकिन कहलाते अभी भी ब्राह्मण ही हैं।

स्मृति–पुराणों में ब्राह्मण के 8 भेदों का वर्णन मिलता है– मात्र, ब्राह्मण, श्रोत्रिय, अनुचान, भ्रूण, ऋषिकल्प, ऋषि और मुनि। 8 प्रकार के ब्राह्मण श्रुति में पहले बताए गए हैं। इसके अलावा वंश, विद्या और सदाचार से ऊंचे उठे हुए ब्राह्मण 'त्रिशुक्ल' कहलाते हैं। ब्राह्मण को धर्मज्ञ विप्र और द्विज भी कहा जाता है।

उपनाम में छिपा है पूरा इतिहास

1. मात्र– ऐसे ब्राह्मण जो जाति से ब्राह्मण हैं लेकिन वे कर्म से ब्राह्मण नहीं हैं उन्हें मात्र कहा गया है। ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से कोई ब्राह्मण नहीं कहलाता। बहुत से ब्राह्मण ब्राह्मणोचित उपनयन संस्कार और वैदिक कर्मों से दूर हैं, तो वैसे मात्र हैं। उनमें से कुछ तो यह भी नहीं हैं। वे बस शूद्र हैं। वे तरह तरह के देवी–देवताओं की पूजा करते हैं और रात्रि के क्रियाकांड में लिप्त रहते हैं। वे सभी राक्षस धर्मी भी हो सकते हैं।

2. ब्राह्मण– ईश्वरवादी, वेदपाठी, ब्रह्मगामी, सरल, एकांतप्रिय, सत्यवादी और बुद्धि से जो दृढ़ हैं, वे ब्राह्मण कहे गए हैं। तरह–तरह की पूजा–पाठ आदि पुराणिकों के कर्म को छोड़कर जो वेदसम्मत आचरण करता है वह ब्राह्मण कहा गया है।

3. श्रोत्रिय– स्मृति अनुसार जो कोई भी मनुष्य वेद की किसी एक शाखा को कल्प और छहों अंगों सहित पढ़कर ब्राह्मणोचित 6 कर्मों में संलग्न रहता है, वह 'श्रोत्रिय' कहलाता है।

4. अनुचान– कोई भी व्यक्ति वेदों और वेदांगों का तत्वज्ञ, पापरहित, शुद्ध चित्त, श्रेष्ठ, श्रोत्रिय विद्यार्थियों को पढ़ाने वाला और विद्वान है, वह 'अनुचान' माना गया है।

5. भ्रूण– अनुचान के समस्त गुणों से युक्त होकर केवल यज्ञ और स्वाध्याय में ही संलग्न रहता है, ऐसे इंद्रिय संयम व्यक्ति को भ्रूण कहा गया है।

6. ऋषिकल्प– जो कोई भी व्यक्ति सभी वेदों, स्मृतियों और लौकिक विषयों का ज्ञान प्राप्त कर मन और इंद्रियों को वश में करके आश्रम में सदा ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए निवास करता है उसे ऋषिकल्प कहा जाता है।

7. ऋषि– ऐसे व्यक्ति जो सम्यक आहार, विहार आदि करते हुए ब्रह्मचारी रहकर संशय और संदेह से परे हैं और जिसके श्राप और अनुग्रह फलित होने लगे हैं, उस सत्यप्रतिज्ञ और समर्थ व्यक्ति को ऋषि कहा गया है।

8. मुनि– जो व्यक्ति निवृत्ति मार्ग में स्थित, संपूर्ण तत्वों का ज्ञाता, ध्याननिष्ठ, जितेन्द्रिय तथा सिद्ध है ऐसे ब्राह्मण को 'मुनि' कहते हैं।

उपर्युक्त में से अधिकतर मात्र नामक ब्राह्मणों की संख्या ही अधिक है।

सबसे पहले ब्राह्मण शब्द का प्रयोग अथर्ववेद के उच्चारण कर्ता ऋषियों के लिए किया गया था। फिर प्रत्येक वेद को समझने के लिए ग्रन्थ लिखे गए उन्हें भी ब्राह्मण साहित्य कहा गया। ब्राह्मण का तब किसी जाति या समाज से नहीं था।

समाज बनने के बाद अब देखा जाए तो भारत में सबसे ज्यादा विभाजन या वर्गीकरण ब्राह्मणों में ही है जैसे– सरयूपारीण, कान्यकुब्ज , जिझौतिया, मैथिल, मराठी, बंगाली, भार्गव, कश्मीरी, सनाढ्य, गौड महा–बामन और भी बहुत कुछ! इसी प्रकार ब्राह्मणों में सबसे ज्यादा उपनाम (सरनेम या टाईटल) भी प्रचलित है। कैसे हुई इन उपनामों की उत्पत्ति जानते हैं उनमें से कुछ के बारे में।

'एक वेद को पढ़ने वाले ब्राह्मण को पाठक कहा गया। 'दो वेद पढ़ने वाले को द्विवेदी कहा गया, जो कालांतर में दुबे हो गया। 'तीन वेद को पढ़ने वाले

समाज बनने के बाद अब देखा जाए तो भारत में सबसे ज्यादा विभाजन या वर्गीकरण ब्राह्मणों में ही है जैसे– सरयूपारीण, कान्यकुब्ज , जिझौतिया, मैथिल, मराठी, बंगाली, भार्गव, कश्मीरी, सनाढ्य, गौड महा–बामन और भी बहुत कुछ! इसी प्रकार ब्राह्मणों में सबसे ज्यादा उपनाम (सरनेम या टाईटल) भी प्रचलित है।

(तस्वीर सांकेतिक है)

इन मुस्लिम देशों में हिंदू मंदिर

दुनिया में भारत और नेपाल ही हिंदू बहुल देश हैं, लेकिन हिंदू पूरी दुनिया में फैले हैं। मुस्लिम देशों में भी उनकी अच्छी खासी तादाद है।

मलेशिया

मलेशिया में हिंदू तमिल समुदाय के बहुत से लोग रहते हैं और इसलिए यहां बहुत सारे मंदिर हैं। गोमबाक में बातु गुफाओं में कई मंदिर हैं। गुफा के प्रवेश स्थल पर हिंदू देवता मुरुगन की विशाल प्रतिमा है।

इंडोनेशिया

आज इंडोनेशिया भले ही दुनिया का सबसे बड़ा मुस्लिम देश है, फिर भी वहां की संस्कृति में हिंदू तौर तरीकों की झलक दिखती है। वहां बड़ी संख्या में हिंदू मंदिर हैं। फोटो में नौवीं सदी के प्रामबानान मंदिर में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा को देखा जा सकता है।

पाकिस्तान

पाकिस्तान के चकवाल जिले में स्थित कटासराज मंदिर का निर्माण सातवीं सदी में हुआ था। इस मंदिर परिसर में राम मंदिर, हनुमान मंदिर और

शिव मंदिर खास तौर से देखे जा सकते हैं। पुरातात्विक विशेषज्ञ इसके रखरखाव में जुटे हैं।

बांग्लादेश

बांग्लादेश की 16 करोड़ से ज्यादा की आबादी में हिंदुओं की हिस्सेदारी लगभग दस फीसदी है। राजधानी ढाका के ढ़ाकेश्वरी मंदिर में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में और भी कई मंदिर हैं।

ओमान

फरवरी 2018 में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब ओमान पहुंचे तो वह राजधानी मस्कट के शिव मंदिर में भी गए। इसके अलावा मस्कट में श्रीकृष्ण मंदिर और एक गुरुद्वारा भी है।

यूएई

संयुक्त अरब अमीरात में अभी सिर्फ एक मंदिर है जो दुबई में है। इसका नाम शिव और कृष्ण मंदिर है। जल्द ही अबु धाबी में पहला मंदिर बनाया जाएगा जिसकी आधारशिला प्रधानमंत्री मोदी ने रखी।

बहरीन

काम की तलाश में बहुत से लोग भारत से बहरीन जाते हैं, जिनमें बहुत से हिंदू भी शामिल हैं। उनकी धार्मिक आस्थाओं के मद्देनजर वहां शिव मंदिर और अयप्पा मंदिर बनाए गए हैं।

अफगानिस्तान

अफगानिस्तान में रहने वाले हिंदुओं की संख्या अब लगभग 1000 ही बची है। इनमें से ज्यादातर काबुल या अन्य दूसरे बड़े शहरों में रहते हैं। अफगानिस्तान में जारी उथल पुथल का शिकार हिंदू मंदिर भी बने। लेकिन काबुल में अब भी कई मंदिर बचे हुए हैं।

लेबनान

लेबनान के जाइतून में भी हिंदू मंदिर मौजूद है। वैसे लेबनान में रहने वाले भारतीयों की संख्या ज्यादा नहीं है। 2006 के इस्राएल–हिज्बोल्लाह युद्ध के बाद वहां भारतीयों की संख्या में कमी आई। (13 फरवरी 2018)

(http://m.hindi.webdunia.com)

को त्रिवेदी कहा गया जिन्हें त्रिपाठी भी कहने लगे, जो कालांतर में तिवारी हो गया। 'चार वेदों को पढ़ने वाले चतुर्वेदी कहलाए, जो कालांतर में चौबे हो गए। 'शुक्ल यजुर्वेद को पढ़ने वाले शुक्ल या शुक्ला कहलाए। 'चारो वेदों, पुराणों और उपनिषदों के ज्ञाता को पंडित कहा गया, जो आगे चलकर पाण्डेय, पांडे, पंडिया, पाध्याय हो गए। ये पाध्याय कालांतर में उपाध्याय हुआ।

'शास्त्र धारण करने वाले या शास्त्रार्थ करने वाले शास्त्री की उपाधि से विभूषित हुए। 'इनके अलावा प्रसिद्द ऋषियों के वंशजों ने अपने ऋषिकुल या गोत्र के नाम को ही उपनाम की तरह अपना लिया, जैसे – भगवान परसुराम भी भृगु कुल के थे। भृगु कुल के वंशज भार्गव कहलाए, इसी तरह गौतम, अग्निहोत्री, गर्ग, भरद्वाज आदि।

'बहुत से ब्राह्मणों को अनेक शासकों ने भी कई तरह की उपाधियां दी, जिसे बाद में उनके वंशजों ने उपनाम की तरह उपयोग किया। इस तरह से ब्राह्मणों के उपनाम प्रचलन में आए। जैसे, राव, रावल, महारावल, कानूनगो, मांडलिक, जमींदार, चौधरी, पटवारी, देशमुख, चीटनीस, प्रधान, 'बनर्जी, मुखर्जी, जोशीजी, शर्माजी, भट्टजी, विश्वकर्माजी, मैथलीजी, झा, धर, श्रीनिवास, मिश्रा, मेंदोला, आपटे आदि हजारों सरनेम है जिनका अपना अलग इतिहास है।

(m.hindi.webdunia.com)

अ.भा. प्रशिक्षण वर्ग

प्रशिक्षण की दृष्टि से शिक्षकों को तैयार करने के लिए उत्तराखण्ड प्रांत का हरिद्वार की पवित्र गायत्री शक्तिपीठ शांतिकुंज में विहिप सत्संग विभाग का नौदिवसीय अ0भा0 प्रशिक्षण (संगीत व संस्कार) गत 6 मार्च से 14 मार्च, 2018 तक सम्पन्न हो गया है। इस वर्ग में 10 क्षेत्र के कुल 19 शिक्षार्थी भाग लिए। इन शिक्षार्थियों का चयन पहले सम्पन्न 3 वर्गों (हरिद्वार, उडुपी, जगन्नाथपुरी) में भाग लिए हुए शिक्षार्थियों में से विशेष रूप से किया गया था। वर्ग में ढपलि और ढोलक का प्रशिक्षण के साथ–साथ जन्मदिन संस्कार और दीप यज्ञ के बारे में भी प्रशिक्षण दिया गया। गायत्री परिवार के अन्तराष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 प्रणव पाण्ड्या ने शिक्षार्थियों को आशीर्वाद प्रदान किया। समापन कार्यक्रम में शांतिकुंज के वरिष्ठ साधक कपिल जी और विश्व हिंदू परिषद के संयुक्त महामंत्री तथा सत्संग विभाग के पालक वाई0 राघवुलू उपस्थित थे।

आदरणीय कपिल जी ने अपना विषय रखते हुए कहा कि भारत माता को विश्वगुरु बनाने के लिए उभय गायत्री परिवार और विश्व हिंदू परिषद प्रयास कर रहे हैं। केन्द्रीय सहमंत्री तथा अ0भा0 सह सत्संग प्रमुख महेन्द्र दादा वेदक ने सबको सत्संग विभाग की तरफ से आभार प्रकट किया। केंद्रीय मंत्री बसंत रथ, केन्द्रीय सत्संग टोली के सदस्य दामोदर नामदेव ने पूरे समय रहकर वर्ग का संचालन किया।

vhp.satsang@gmail.com

होली मिलन समारोह

मेरठ, 4 मार्च। सूरजकुंड स्थित केशव भवन पर विश्व हिन्दू परिषद और दुर्गावाहिनी का होली मिलन और महिला दिवस के उपलक्ष्य में हुए कार्यक्रम में महिलाओं ने भाग लिया।

मुख्य वक्ता दुर्गावाहिनी की मेरठ और पश्चिम क्षेत्र की संयोजिका रजनी ठुकराल ने कहा कि दुर्गा वाहिनी और महिला विभाग की साढ़े पंद्रह हजार समितियां हैं। महिलाएं और बहनें दुर्गा वाहिनी का प्रशिक्षण प्राप्त कर और समाज के बीच जाकर महिलाओं को जागरूक करने का काम करती हैं। प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं को शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास करती हैं। प्रशिक्षण में योग प्राणायाम, जूडो, छुरिका, दंड, तलवार और निशानेबाजी सिखाकर निडर और मजबूत बनाती हैं। दुर्गा वाहिनी समय–समय पर रैलियां और शोभायात्राएं निकालती हैं। बच्चों को संस्कार महिलाएं ही देती हैं। मां के व्यक्तित्व और कृर्तृत्त्व का बच्चों पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ0 अर्चना मित्तल–स्त्री रोग विशेषज्ञ, मुख्य अतिथि श्रीमती प्रीति सोम–पूर्व ब्लाक प्रमुख सरधना, विशिष्ट अतिथि श्रीमती मंजिल सैनी–वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मेरठ, राष्ट्रीय सेवा समिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. वेद प्रभा, वरिष्ठ समाजसेवी डॉ0 सरोजिनी अग्रवाल आदि उपस्थित रहीं।

gopalkrishanatrey@gmail.com

त्रि–दिवसीय वसन्त मेला

11 मार्च। महर्षि वाल्मीकि सेवा संस्थान नौगढ़ में वसन्त पंचमी को त्रिदिवसीय वसन्त मेला का शुभारंभ संत रविदास मंदिर वाराणसी के महंत आचार्य भारत भूषण जी महाराज एवं क्षेत्र सेवा प्रमुख (उ0प्र0 एवं उत्तराखण्ड) श्री राधेश्याम द्विवेदी जी द्वारा संपन्न हुआ।

परिसर स्थित पंचदेव मंदिर में जलाभिषेक, सामूहिक यज्ञ पूजन, कवि सम्मेलन संपन्न हुआ। दूसरे दिन अंतर्विद्यालीय विविध प्रतियोगितायें, स्थानीय व्यक्तिगीत एवं कुश्ती प्रतियोगिता हुई। जीते हुये प्रतिभागी को रू0 2000/– पुरस्कार दिया गया। स्थानीय प्रतिभाओं की खोज हुई।

तीसरे दिन – संस्थान का वार्षिक समारोह संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता पूज्य संत भारत भूषण जी महाराज ने की । मुख्य अतिथि श्रीमान प्रदीप डे. जी–प्रबंधक स्मिथ विद्यालय वाराणसी, स्वागताध्यक्ष प्रसिद्ध समाजसेवी श्रीमती रानिका जायसवाल व ख्याति प्राप्त सर्जन डॉ0 शिव कुमार जायसवाल निदेशक दीर्घायु हॉस्पिटल वाराणसी रहे तथा विशिष्ट अतिथि क्षेत्र संगठन मंत्री लखनऊ क्षेत्र अंबरीश जी रहे।

छात्रावासी बालकों ने योग, दंड प्रहार आदि लोक हर्षक शारीरिक एवं मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

वनवासी सहभोज में 3 हजार वनवासी, गिरिवासी, नगरवासी, ग्रामवासी एवं संत महात्माओं ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

– **राधेश्याम द्विवेदी**
क्षेत्र सेवा प्रमुख–उ0प्र0 एवं
उत्तराखण्ड

ग्वालियर में ७ दिवसीय राष्ट्रीय रामायण मेला

राष्ट्रीय रामायण मेला ग्वालियर के मंच पर देश के श्रेष्ठ संतों की उपस्थिति और विशाल तुलसी मंडपम् में अपने मस्तक पर रामचरितमानस धारण किये रामभक्तों का अपार जनसमूह, संतों की ओर से संकल्प विधि की घोषणा और इसको दोहराते हजारों नर–नारी–'मैं संकल्प करता हूँ कि नित्य रामचरितमानस के कम से कम दो दोहे का पारायण करूंगा'। किसी कुम्भ मेला के बड़े अखाड़े की तरह ग्वालियर में केसरिया पताकाओं से सुसज्जित अयोध्या धाम परिसर सात दिनों में पूरे ग्वालियर अंचल में एक संस्कार अभियान की तरह अमिट छाप छोड़ गया। कुम्भ मेले की तर्ज पर यहाँ संत नगर बसाया गया था।

भारत में चित्रकूट और अयोध्या के बाद अपने प्रकार के अनूठे रामायण मेला में देश के विभिन्न भागों के श्रद्धालुओं ने भी हिस्सा लिया। 23 फरवरी को लगभग एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने महाप्रसाद ग्रहण किया।

समाज में आदर्शों, संस्कारों और परम्पराओं के जागरण की सोच लेकर 17 से 23 फरवरी तक देशभर से साधु–संत, राम कथाकार और मानस मर्मज्ञ ग्वालियर में जुटे। इस दौरान 51 ब्राह्मणों के द्वारा प्रतिदिन आनुष्ठानिक रामायण पाठ, मानस सम्मलेन, रामकथा, रामलीला, प्रदर्शनी, कलश यात्रा और अंत में नित्य मानस पारायण का संकल्प हुआ। इन सात दिनों में सबसे विशेष उपस्थिति रही। जगद्गुरुरामभद्राचार्य और राम जन्मभूमि न्यास के कार्याध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास जी महाराज की।

इस मेले की संकल्पना बजरंग दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष और विहिप के नेता रहे जयभान सिंह पवैया की है।

–डा. अनिल सौमित्र और सुमित शर्मा
anilsaumitra0@gmail.com

सामाजिक समरसता गोष्ठी

जम्मू, 6 मार्च। धर्म जागरण समन्वय की ओर से सामाजिक समरसता का कार्यक्रम कारगिल भवन अम्बफला जम्मू में श्रीमान राकेश कुमार (प्रांत प्रमुख धर्म जागरण समन्वय) मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। विक्रांत जी (प्रांत प्रमुख सामाजिक समरसता) की अध्यक्षता में आयोजित हुआ जिसमें अलग–अलग बिरादरियों के प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया।

kamalsinghjamwal7@gmail.com

बजरंग दल शिक्षक प्रशिक्षण वर्ग, 23, 24, 25 फरवरी, 2018
केवल ज्ञान मंदिर, सिगरा, काशी,

शोक सभा

वाराणसी, 28 फरवरी। धर्म जागरण न्यास उत्तर प्रदेश (विहिप) की एक आकस्मिक बैठक न्यास के प्रधान कार्यालय श्री नरसिंह मठ वाराणसी में संपन्न हुई जिसमें वेद के प्रकांड विद्वान और भारतीय संस्कृति के पुरोधा कांची कामकोटि पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी जयेंद्र सरस्वती जी महाराज के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया!

vijaychoudharymachoudharyvns@gmail.com

सेवा शिविर

फाल्गुनी पूर्णिमा के समय यात्राधाम डाकोर में प्रतिवर्ष पैदल यात्रा द्वारा लोग दर्शन के लिए लाखों की संख्या में जाते हैं। ऐसे समय में विहिप उ0 गुजरात सेवा विभाग द्वारा स्वामीनारायण सत्संग हाल, हीरापुर चौकडी, अहमदाबाद में पंडाल लगाकर मेडिकल कैम्प, दवा, यात्रियों की सेवा सुश्रुशा की गई। 12 हजार यात्रियों की सेवा की गई।

विहिप उ0गुजरात प्रांत सेवा प्रमुख भगुभाई पटेल, प्रांत संगठन मंत्री कामेन्दु सिंह राठौड, कालूपुर जिला प्रमुख रमेशभाई दवे एवं सेवा प्रमुख प्रवीणभाई राठौड़, रोहित भाई सोनी, डॉ0 नवीनभाई मोदी ने विशेष सेवा दी।

– भृगुभाई पटेल
प्रांत सेवा प्रमुख उ0गुजरात प्रांत
(ihlcallcentre@gmail.com)

प्रांतीय बैठक

नई दिल्ली, 08.03.2018। विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली प्रांत कार्यालय में प्रांतीय बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें प्रांत मंत्री श्रीमान बचन सिंह जी के मार्गदर्शन में लक्ष्य तय किया गया कि राम मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट का निर्णय आने से पूर्व, प्रांत के प्रत्येक जिले में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (वर्ष प्रतिपदा) 18 मार्च 2018 से प्रारम्भ होकर चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (हनुमान जयन्ती) 31 मार्च 2018 तक जप अनुष्ठान कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

(dharmendra312@gmail.com)

श्रद्धांजलि

10 मार्च। गुजरात क्षेत्र के वडोदरा महानगर में हुतात्मा रामसेवकों को श्रद्धांजलि अर्पण करने का कार्यक्रम महानगर के पदाधिकारियों के लिए परिषद कार्यालय पर रखा गया, जिसमें क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री रोहितभाई दरजी ने घटना के बारे में जानकारी दी। (varmadipen@gmail.com)

वनवासी गांव समरेली, सीतामपेटा मण्डल, श्रीकाकुलम् जिले में श्री कोटा दुर्गाम्या मूर्ति प्रतिष्ठा समारोह, 8 मार्च।
(satyam.vhp60@gmail.com)

श्री श्यामलकांति सेहगुप्ता

श्री सुधामय दत्त

श्री दीनेन्द्र डे

श्री शुभंकर चक्रवर्ती

कुछ याद इन्हें भी कर लो...

विजय कुमार

भारतीय जनता पार्टी पूरे देश में पूर्वोत्तर भारत में हुई विशाल जीत का जश्न मना रही है। जहां लम्बे समय तक उन्हें कोई पूछता नहीं था, वहां ऐसी विराट सफलता सचमुच आश्चर्यजनक ही है पर इसके पीछे संघ और समविचारी संगठनों का जो परिश्रम छिपा है, उसे भी समझना जरूरी है।

शाखा के अलावा संघ ने और कई काम भी शुरू किये हैं। सेवा के काम इनमें सबसे महत्वपूर्ण हैं। आपातकाल के बाद सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस ने सेवा कार्यों पर जोर दिया। संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री विष्णु जी की देखरेख में सबसे पहले दिल्ली की निर्धन बस्तियों में और फिर पूरे देश में ऐसे केन्द्र खोले गये। इनकी संख्या अब एक लाख से भी अधिक है। शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार प्रशिक्षण, संस्कारशाला, कीर्तन मंडली..जैसे इन केन्द्रों से सेवा के साथ ही संघ का विचार भी लोगों तक पहुंचता है। संघ विचार का हर संगठन किसी न किसी रूप में सेवा जरूर कर रहा है।

'वनवासी कल्याण आश्रम' जनजातियों में काम करता है। संस्था द्वारा लडके और लडकियों के अलग–अलग सैकडों छात्रावास पूरे देश में चल रहे हैं। समाज के सहयोग से संचालित इन छात्रावासों के छात्र अन्य राज्य वालों के संपर्क में आते हैं। इससे उनके मन का अलगाव दूर होता है। उन्हें पता लगता है कि वे केवल अपने राज्य या कबीले के नहीं, पूरे भारत के नागरिक हैं। ये छात्र जब वापिस जाते हैं, तो उनके संस्कारों से पूरा गांव प्रभावित होता है।

इन छात्रावासों से सैकड़ों पूर्णकालिक कार्यकर्ता बने हैं, जो अपने ही क्षेत्र में काम कर रहे हैं। ईसाई भी वहां इसी विधि से बढ़े हैं, पर वे उन्हें अपने देश, धर्म, परम्परा, भाषा, भूषा आदि से काटते हैं, जबकि संघ इनसे जोडता है। इसीलिए जिस अलगाव को फैलाने में मिशनरियों को 300 साल लगे, उसे संघ 50 साल में ही दूर करने में सफल हो रहा है।

विश्व हिन्दू परिषद भी अपने स्थापना काल (1964) से यहां के साधु–संतों में कार्यरत है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय धर्मसभाओं में जब ये संत जाते हैं, तो इनका दृष्टिकोण व्यापक होता है। इससे वह क्षेत्र तथा जनजाति संपर्क में आती है, जहां इनका प्रभाव है। वि.हि.प. की 'एकल विद्यालय योजना' से भी यहां व्यापक परिवर्तन हुआ है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा 1966 से संचालित 'अंतरराज्यीय छात्र जीवन दर्शन' प्रकल्प का पूर्वोत्तर में

वैचारिक रूप से भी यह भाजपा की बड़ी जीत है। पहली बार उसका सीधा मुकाबला वामपंथी विचारधारा के साथ हुआ था, जिसमें भाजपा ने लेफ्ट को मात दी है। इस लिहाज से भी त्रिपुरा की जीत और नगालैंड का प्रदर्शन बहुत अहम है। त्रिपुरा में जीत के बाद भाजपा ने कहना शुरू कर दिया है कि लेफ्ट अब सिर्फ तीन जगहों पर बचा है– जेएनयू, केरल और एक खास टेलीविजन चैनल के स्टूडियो में! इन तीन जगहों पर भी उसके सामने गंभीर चुनौती है। बारीकी से देखें तो लेफ्ट के दो ही किले थे– पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा। बाकी केरल में तो पार्टी दूसरी क्षेत्रीय पार्टियों के दम पर राजनीति करती है और पांच साल पर कांग्रेस के साथ सत्ता की अदला बदली करती है। सो, त्रिपुरा की हार के बाद लेफ्ट का कोई गढ़ नहीं बचा। पश्चिम बंगाल में तो भाजपा ही उसकी जगह लेती दिख रही है।

पूर्वोत्तर में भाजपा की जीत का दूसरा बड़ा वैचारिक संदेश यह है कि ईसाई बहुल इलाकों में भी भाजपा जीती है। चर्च की ताकत और उसकी अपील के ऊपर राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ की अपील भारी पड़ी है। भाजपा ने हिंदुओं को यह भरोसा दिलाया कि वह उनकी पार्टी है और ईसाइयों को यह यकीन दिलाया कि वह उनको मुफ्त में यरुशलम भेजेगी और बीफ की कमी नहीं होने देगी। गोवा के बाद पूर्वोत्तर के राज्यों में भाजपा की जीत उसकी अखिल भारतीय स्वीकार्यता का बहुत स्पष्ट संकेत है, जिसे समझना ही होगा।

अजित द्विवेदी द्वारा लिखित भाजपा की यह जीत मामूली नहीं के संपादित अंश
(5 मार्च, 2018)

देश में गोमांस पर नहीं लगेगी रोक : शाह

पणजी, 29 मई। भाजपा पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने कहा कि जहां भी भाजपा की सरकार रहेगी, वह हम गोमांस पर बैन लगाने से पहले लोगों की संवदेनाओं पर विचार करेंगे। हमने यह नहीं कहा कि हम पूरे देश में गोमांस पर बैन लगायेंगे। महाराष्ट्र और हरियाणा की भाजपा सरकारों ने गोमांस पर बैन लगा दिया है लेकिन शाह ने स्पष्ट किया कि जिन राज्यों में भाजपा की सरकारें हैं, पार्टी उन राज्यों में गोमांस पर बैन लगाने पर ज्यादा दबाव नहीं देगी। इस संबंध में संबंधित सरकारों को जनसंवेदनाओ को ध्यान में रखकर उचित निर्णय लिया जायेगा।

श्रीनगर जेल बनी आतंकवादियों की भर्ती का अड्डा

श्रीनगर, 12 मार्च। श्रीनगर की सेंट्रल जेल में कैदियों के पाकिस्तान से संबंध होने का एक बड़ा खुलासा हुआ है। आतंकवादी इस जेल में बैठे आतंकी गतिविधियों को खुलेआम अंजाम दे रहे हैं। इस साजिश का खुलासा एनआईए के छापे से हुआ है।

राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने सोमवार को यहां केंद्रीय कारागार पर छापा मारा और वहां से दो दर्जन से अधिक मोबाइल फोन, जिहादी साहित्य, पाकस्तानी झंडा और डाटा हार्डवेयर जब्त किया।

- **श्रीनगर की सेंट्रल जेल में एनआईए की छापेमारी।**
- **जेल से मिले पाकिस्तानी झंडे और जिहादी सामग्री।**

एनआईए की कम से कम 20 टीमों ने इस हाई सिक्योरिटी वाली जेल के बैरकों एवं खुली जगहों की तलाशी ली। इन टीमों की मदद के लिए एनएसजी के कमांडो एवं ड्रोन भी लगाए गए थे। जेल में कुछ अतिवांछित और दुर्दांत आतंकवादी भी हैं। उनमें कुछ पाकिस्तान के भी हैं।

पिछले महीने ही जम्मू–कश्मीर सीआईडी की रिपोर्ट ने खुलासा किया था कि श्रीनगर की सेंट्रल जेल आंतकवादियों की भर्ती करने का एक अड्डा बन गई है। यहां कैदी एक समानांतर प्रशासनिक ढांचा खड़ा कर रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है जेल अधिकारियों द्वारा चेतावनी दिए जाने के बावजूद स्थानीय पुलिस ने इसे नजरअंदाज किया। रिपोर्ट में कहा गया कि वर्तमान में सेंट्रल जेल की भूमिका इतनी महत्त्वपूर्ण हो गई है कि प्रत्येक नए आतंकवादी की भर्ती केवल जेल के भीतर से मंजूरी मिलने के बाद ही होती है। – कपिल तिवारी

(https://www.patrika.com)

३०० से ज्यादा मूर्तियां तोड़ोगे तो बनोगे मोहम्मद!

त्रिपुरा में बीजेपी की शानदार जीत के बाद कम्युनिस्टों के आदर्श व्लादिमीर लेनिन की मूर्ति ढहा दी गई थी। लेनिन की मूर्ति गिराने के बाद देश के कई हिस्सों में महापुरुषों और विचारकों की मूर्ति ढ़हाने का सिलसिला शुरू हो गया था। मूर्ति ढहाने के मामले में बांग्लादेशी लेखिका तस्लीमा नसरीन ने कटाक्ष करते हुए ट्वीट किया है। उन्होंने प्रतिमाओं को गिराने वाले लोगों पर निशाना साधते हुए कहा, 'कितनी मूर्तियां अभी तक ढ़हाई जा चुकी है? अगर तुम लोग 300 से ज्यादा मूर्तियां गिरा दोगे तो तुम भी मोहम्मद कहलाओगे।'

शेष पृष्ठ 19 पर....

बहुत लाभ हुआ है। इसके अन्तर्गत युवाओं को दूसरे राज्यों में ले जाकर परिवारों में ठहराते हैं। इससे राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित होती है। ऐसे कई युवा राजनीति में भी सक्रिय हैं। कन्याकुमारी के विवेकानंद केन्द्र से संचालित विद्यालय एवं छात्रावासों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

लेकिन ये काम इतना आसान नहीं रहा। वामपंथी और ईसाइयों के कई गुटों ने संघ का सदा हिंसक विरोध किया है। अतः पूरे देश से सैकड़ों साहसी, समर्पित और सुशिक्षित प्रचारक वहां भेजे गये। महाराष्ट्र निवासी सुनील देवधर भी ऐसे ही कार्यकर्ता हैं। ये सब स्थानीय भाषा, बोली, खानपान और रीति–रिवाजों के साथ समरस होकर रहते हैं। इनके कारण स्थानीय कार्यकर्ता भी बड़ी संख्या में प्रचारक एवं पूर्णकालिक बन रहे हैं।

इस दौरान कई कार्यकर्ताओं को अपने प्राण भी खोने पड़े। ऐसे चार कार्यकर्ताओं की चर्चा यहां उचित होगी, जिनका छः अगस्त, 1999 को कंचनपुरा छात्रावास से अपहरण किया गया था। त्रिपुरा के वामपंथी शासन ने उनकी खोज का नाटक तो किया पर उससे कुछ नहीं हुआ और उनकी निर्मम हत्या कर दी गयी।

यह घृणित कार्य बैपटिस्ट ईसाई मिशन से प्रेरित आतंकी गुट एन.एल.एफ.टी. ने किया था। उन दिनों दिल्ली में अटल जी की सरकार थी। जब–जब केन्द्र ने इनकी खोज का प्रयास किया, तब–तब उन्हें चटगांव (बांग्लादेश) भेज दिया जाता था। 28 जुलाई, 2001 को शासन ने उनकी हत्या की घोषणा कर दी। यद्यपि ये हत्या छः महीने पहले कर दी गयी थीं। मार्च 2000 में गुवाहाटी के संघ कार्यालय में चारों द्वारा हस्ताक्षरित एक पत्र आया था। उसमें उन्होंने लिखा था कि वे अभी जीवित हैं पर भीषण शारीरिक और मानसिक यातना झेल रहे हैं।

ये कार्यकर्ता थे–पूर्वांचल क्षेत्र कार्यवाह श्री श्यामलकांति सेनगुप्त, विभाग प्रचारक सुधामय दत्त, जिला प्रचारक शुभंकर चक्रवर्ती तथा शारीरिक शिक्षण प्रमुख दीपेन्द्र डे। पता नहीं उनकी हत्या कब, कैसे और कहां हुई तथा उनके शवों का क्या हुआ ?ऐसे में उनके परिजनों का दर्द समझा जा सकता है। श्यामल जी गृहस्थ थे, जबकि बाकी तीनों अविवाहित प्रचारक। इसके अलावा सर्वश्री ओमप्रकाश चतुर्वेदी, मुरलीधरन, प्रमोद नारायण दीक्षित, प्रफुल्ल गोगोई, शुक्लेश्वर मेधी तथा मधुमंगल शर्मा भी आंतक के शिकार हुए हैं।

आज पूर्वोत्तर भारत के केसरिया वातावरण में उन कार्यकर्ताओं की याद आना स्वाभाविक है। इन हत्याओं की पूरी जांच तथा आतंकी गुटों का समूल नाश त्रिपुरा की नयी भा.ज.पा. सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए।

– निदेशक, विश्व संवाद केन्द्र, सुदर्शन कुंज, सुमन नगर, धर्मपुर, देहरादून
(vj.kumar.1956@gmail.com)

नमो राज में "अल्पसंख्यकों" की बल्ले-बल्ले

हमारा समाज 2 फरवरी के अनुसार केन्द्र की मोदी सरकार ने अपनी इस कार्यकाल का आखिरी पूर्णकालिक बजट पेश किया। मोदी सरकार किसान और आदिवासियों के साथ– साथ देश के अल्पसंख्यकों के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए बजट में मेहरबान दिखी। वित्त मंत्री अरूण जेटली ने संसद में आम बजट पेश किया जिसमें अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय के लिए 4700 करोड़ रुपये का आबंटन किया। साल 2017–18 में 4195.48 करोड़ रुपये आबंटित किए गए थे। इस तरह 2018–19 के बजट की तुलना में अल्पसंख्यक मंत्रालय के लिए 505 करोड़ रुपये की वृद्धि की गई।

पिछले चार साल में मोदी सरकार ने अल्पसंख्यकों के बजट में करीब एक हजार करोड़ रुपये की बढ़ोत्तरी की है। अल्पसंख्यकों के लिए मिलने वाले बजट को मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन और पारसी समुदाय के विकास के लिए खर्च किया जाता है। 2006 में पहली बार वजूद में आए अल्पसंख्यक मंत्रालय को 143 करोड़ का बजट मिला था लेकिन अब ये आंकड़ा 4700 करोड़ पहुंच गया है।

अल्पसंख्यक कार्य मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने अपने मंत्रालय के बजट में वृद्धि को 'रिकार्ड बढ़ोत्तरी' करार दिया। उन्होंने कहा कि 'अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय के बजट में इस रिकार्ड बढ़ोत्तरी के सभी अल्पसंख्यक तबकों के सम्मान के साथ सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक सशक्तिकरण में मदद मिलेगी।' सत्ता के सिंहासन पर नरेंद्र मोदी 2014 में प्रचंड बहुमत के साथ विराजमान हुए। सरकार ने अपना पहला बजट 2014–15 में पेश किया। बीजेपी और अल्पसंख्यकों के बीच जिस तरह विरोधाभास रहा है, उससे लग रहा था कि मोदी सरकार अल्पसंख्यक मंत्रालय को कोई खास महत्व नहीं देगी।

लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने इस अनुमान को तोडते हुए अपने मूल मंत्र ''सबका साथ, सबका विकास'' के तहत अल्पसंख्यकों के लिए अपने पहले बजट में 3711 करोड़ रुपये का धन आबंटित किया था। 2013–14 में मनमोहन सरकार ने 3511 करोड़ रुपये दिए थे। इस तरह मोदी सरकार ने मनमोहन सरकार के आखिरी बजट की तुलना में 200 करोड़ रुपये अल्पसंख्यकों को ज्यादा दिया। मोदी सरकार ने दूसरा बजट 2015– 16 में पेश किया। इसमें अल्पसंख्यक कल्याण के लिए मोदी सरकार ने बजट में 3717 करोड़ रुपये आबंटित किए। इस तरह मोदी सरकार ने अपने पहले बजट की तुलना में पौने दो करोड़ रुपये का मामूली इजाफा किया। केंद्र की मोदी सरकार ने अपना तीसरा बजट 2016 में पेश किया।

केंद्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली ने मोदी सरकार के 2016– 17 के बजट में भी अल्पसंख्यकों पर मेहरबानी दिखाई। मोदी ने अल्पसंख्यक कल्याण के लिए 3827.25 करोड़ रुपये आबंटित किए। पिछले साल अपने चौथे बजट में मोदी सरकार अल्पसंख्यकों पर खूब मेहरबान नजर आई। 2017– 18 के बजट में मोदी सरकार ने अल्पसंख्यक कल्याण के लिए 4195.48 करोड़ रुपये आबंटित किया। अल्पसंख्यक मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने इसे अब तक की सबसे बड़ी बढ़ोतरी बताया था। यह अल्पसंख्यक मंत्रालय के इतिहास में सबसे ज्यादा था। **बीजेपी के सत्ता में आने के बाद पिछले चारों बजट को देखें तो करीब 500 करोड़ रुपये का इजाफा था।**

(भारत नीति प्रतिष्ठान, 15 फर. 1)

पृष्ठ 18 का शेषांश...

उन्होंने कहा था, 'मुस्लिम कट्टरपंथियों ने मूर्तियों को नष्ट किया। मोहम्मद ने काबा में 360 मूर्तियां तोड़ी थीं। आईएसआईएस ने इराक और सीरिया में मूर्तियां और स्मारक तोड़े हैं। तालिबान ने बामियान बुद्धा को तोड़ा, जमात–ए–इस्लामी ने बांग्लादेश में लालोन की प्रतिमा तोड़ी।' एक अन्य ट्वीट कर उन्होंने कहा था, 'भविष्य बनाने के लिए इतिहास को खत्म करने की जरूरत नहीं होती। अगर आप सच में एक अच्छी दुनिया बनाना चाहते हैं तो आपको सबसे पहले नफरत को खत्म करना होगा।' (12मार्च)

(https://www.jansatta.com)

कुरान में छिपाकर ड्रग्स की तस्करी कर रहे थे रोहिंग्या

तस्लीमा नसरीन ने ट्वीट किया, "बांग्लादेश में ३ रोहिंग्या गिरफ्तार किए गए हैं, इन लोगों ने अपने पवित्र कुरान का उपयोग याबा की तस्करी के लिए किया जिसे मैडनेस ड्रग भी कहा जाता है।" तस्लीमा नसरीन ने गिरफ्तार किए लोगों की चित्रें शेयर की है। इस चित्र में तीन लोग दिख रहे हैं, उनके पीछे बांग्लादेश के ६ सुरक्षा बल खड़े हैं। सामने एक टेबल पर ड्रग्स के पैकेट्स रख हुए हैं। बता दें कि म्यांमार से आए लगभग ६ लाख रोहिंग्या मुसलमान इस समय बांग्लादेश में रह रहे हैं। इन पर कई बार अवैध गतिविधियों में शामिल होने का भी आरोप लगता रहता है।

बता दें कि समुद्री तट से सटे होने की वजह से बांग्लादेश में ड्रग्स की तस्करी बड़े पैमाने पर होती है। बांग्लादेश के डिपार्टमेंट ऑफ नारकोटिक्स ने पिछले साल सितंबर में भी तीन रोहिंग्या मुसलमानों को गिरफ्तार किया था। पिछले कुछ सालों में बांग्लादेश में इसकी तस्करी में इजाफा हुआ है। बांग्लादेश की कानून एजेंसियों का मानना है कि लोग लचीले कानून का फायदा उठाकर इस मामले में गिरफ्तार होने के बावजूद बेल ले लेते हैं और फिर से इस अपराध की राह पर चल पड़ते हैं। (जनसत्ता, 18 मार्च)

जिंदादिली और जिजीविषा की प्रतिमूर्ति महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग

देवेन्द्रराज सुथार

ईश्वर के अस्तित्व को चुनौती देने वाले व ब्रह्मांड के रहस्यों को उजागार करने वाले महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग का 76 वर्ष की उम्र में निधन होना विज्ञान जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग का जन्म 8 जनवरी, 1942 को इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड में हुआ था।

स्टीफन के पिता रिसर्च बायोलॉजिस्ट थे और मां एक गृहिणी थी। उन्हें द्वितीय विश्वयुद्ध के चलते जन्म के बाद ही अपनी मां के साथ लंदन जाना पड़ा था। लंदन में ही पले–बढ़े हॉकिंग की बचपन से ही फिजिक्स और अंतरिक्ष के बारे में जानने में बहुत रुचि थी। उन्होंने अपनी गर्लफ्रेंड जेन वाइल्ड से शादी की थी। बाद में उनका तलाक हो गया। तलाक का कारण यह बताया

जाता है कि जेन वाइल्ड एक धर्मालु व ईश्वर में आस्था रखने वाली महिला थीं और हॉकिंग नास्तिक प्रवृत्ति के इंसान थे।

हॉकिंग साल 1964 से ही **मोटर न्यूरोन नामक लाइलाज बीमारी** से बीमार चल रहे थे। इस बीमारी में शरीर का हिस्सा धीरे–धीरे काम करना बंद कर देता है और इंसान की बेहद ही दर्दनाक तरह से मौत हो जाती है। दरअसल जब इस बीमारी का हॉकिंग को पता चला और डॉक्टरों ने उन्हें यह कहा कि वे केवल दो साल के ही मेहमान है। तो उन्हें इस बात पर विश्वास नहीं हुआ और उन्होंने पचास साल जीने का दावा डॉक्टरों से कर दिया था। आखिरकार उनका यह दावा सच भी हुआ।

जब उन्होंने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और जिजीविषा के दम पर जी कर और दुनिया को अपनी कई महान खोजों से अवगत कराकर दिखाया। भले व्हीलचेयर ने उन्हें शारीरिक रूप से अपंग कर दिया था, लेकिन वे मानसिक रूप से बिलकुल स्वस्थ थे। उन्होंने ब्लैक होल और बिग–बैंग थ्योरी को समझने में अपना अहम योगदान दिया। अपने जीवनकाल में 12 मानद डिग्रियों के साथ अमेरिका का सबसे उच्च नागरिक सम्मान हासिल किया। उनकी किताब

शेष पृष्ठ 21 पर....

केन्द्र ने कहा

देश की जनसांख्यिकी बदले की जारी है कोशिश

नई दिल्ली : रोहिंग्या मुसलमानों को वापस म्यांमार भेजने के केंद्र सरकार के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार ने कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा को खतरा पहुंचाने की कोशिश करने वालों की पहचान होनी चाहिए। केंद्र ने कहा कि इस बात की जांच होनी चाहिए कि कौन देश के डिमॉग्रफी (जनसांख्यिकी) को बदलने की कोशिश कर रहा है और देश की आंतरिक सुरक्षा को खतरा पैदा करने की कोशिश कर रहा है, इसको देखने की जरूरत है।

सुप्रीम कोर्ट में इस दौरान याचिकाकर्ता ने रोहिंग्या शरणार्थियों के लिए हेल्थ और बच्चों के लिए एजुकेशन देने की गुहार लगाई लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में फिलहाल कोई अंतरिम आदेश देने से मना कर दिया। सुप्रीम कोर्ट में केंद्र सरकार ने दलील दी कि ये मामला राजनयिक स्तर पर सुलझाने दिया जाए इसमें कोर्ट का दखल नहीं होना चाहिए।

सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार ने बताया कि देश में रहने वाले हर शख्स को स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाएं दी जा रही है। इस मामले में देश के नागरिक या फिर विदेशी में कोई फर्क नहीं किया जाता है। इससे पहले याचिकाकर्ता के वकील प्रशांत भूषण ने कहा कि इस मामले में अंतरिम आदेश पारित किया जाना चाहिए। रोहिंग्या शरणार्थियों के बच्चों को बेसिक एजुकेशन और हेल्थ की सुविधाएं दी जाए। केंद्र सरकार को निर्देश देने की गुहार लगाई गई और कहा गया कि सुप्रीम कोर्ट अंतरिम आदेश पारित करे।

लेकिन सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा की अगुआई वाली बेंच ने कहा कि केंद्र सरकार ने जो हलफनामा दायर किया है और जो जवाब दाखिल किया है, उसके तहत हम कोई अंतरिम आदेश पारित नहीं कर रहे हैं। मामले में आखिरी सुनवाई 9 अप्रैल को होगी।

राजेश चौधरी,
नवभारत टाइम्स, 20 मार्च

रोहिंग्या शरणार्थी कैंपों में एक साल में पैदा होंगे ६०,००० बच्चे

नई देहली, 27 फरवरी। अगले एक वर्ष में रोहिंग्या शरणार्थी शिविरों में ६०,००० बच्चों के जन्म लेने का अनुमान है! इन बच्चों के जन्म लेने के बाद संकट झेल रहे इस समुदाय की स्थिति और विकट हो सकती है!

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की दक्षिण–पूर्व एशियाई क्षेत्रीय निदेशक डॉ. पूनम खेत्रपाल ने छह महीने पहले शुरु हुए रोहिंग्या संकट को अब तक का सबसे बड़ा मानवीय संकट बताते हुए कहा कि आगामी मानसून सीजन में इन शरणार्थियों की दिक्कतें और बढ़नेवाली हैं! अकेले बांग्लादेश में लगभग १० लाख रोहिंग्या शरणार्थी पनाह लिए हुए हैं, जो कुपोषण के साथ–साथ मानसिक बीमारियों से जूझ रहे हैं जिनमें सर्वाधिक दयनीय स्थिति बच्चों की है! (https://www.hindujagruti.org)

पृष्ठ 20 का शेषांश....

'अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' को. बेस्टसेलर का दर्जा भी मिला। केवल विज्ञान के क्षेत्र में ही नहीं, हॉकिंग की टीवी शो की दुनिया में भी बड़ी धूम थी।

हॉकिंग को उनकी सिंथेटिक आवाज और खास अंदाज ने एक सेलेब्रिटी बना दिया था। वे बेहद ही जिंदादिल और विनोदप्रिय इंसान थे। हॉकिंग पूरी उम्र ब्लैक होल्स पर कम करते रहे। उनकी यह मान्यता थी कि ब्लैक होल में जो एक बार समा जाता है वो कभी बाहर नहीं निकलता। लेकिन हॉकिंग ने 1974 में खोज निकाला कि ब्लैक होल्स खुद एक तरह की किरणें या रेडिएशन निकालते हैं जिन्हें बाद में 'हॉकिंग रेडिएशन' कहा गया। लेकिन हॉकिंस को सबसे ज्यादा प्रसिद्धि जिस काम से मिली थी वो थी उनकी 'थ्योरी ऑफ एव्रीथिंग'।

ब्रह्मांड में होने वाली सभी घटनाओं को समझाने के लिए हॉकिंग ने कुछ नियम बताए थे। उनका कहना था कि ब्रह्मांड में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इन नियमों के विरुद्ध चले। इस थ्योरी ने उन्हें आम जनता के बीच भी बहुत लोकप्रिय कर दिया था। हॉकिंग के जीवन पर आधारित एक हॉलीवुड फिल्म 2014 में रिलीज हुई थी, जिसका नाम 'द थ्योरी ऑफ एव्रीथिंग' था। हॉकिंग कहा करते थे – 'ईश्वर को पासों का खेल पसंद है वो उस समय अपने पासे फेंकता है, जब कोई देख नहीं रहा होता।' और इस तरह हॉकिंग भी ईश्वर के पासे में फंस गए और दुनिया को कह गए– अलविदा !

http://m.hindi.webdunia.com

हॉकिंग कहा करते थे – 'ईश्वर को पासों का खेल पसंद है वो उस समय अपने पासे फेंकता है, जब कोई देख नहीं रहा होता।' और इस तरह हॉकिंग भी ईश्वर के पासे में फंस गए और दुनिया को कह गए– अलविदा !

चीन ने भारत सीमा पर तैनात किए कॉम्बैट सिस्टम से लैस सैनिक

नई दिल्ली, 23 फरवरी। चीन की सेना (PLA) ने भारत की सीमा पर तैनात अपनी एक शाखा को बेहद ताकतवर अमेरिकी शैली के सोल्जर कॉम्बैट सिस्टम से लैस किया है। चीनी मीडिया के अनुसार भविष्य में सेना को इससे ''सूचनाबद्ध युद्ध'' के लिए तैयार किया जा सकेगा। इस अत्याधुनिक क्यूटीएस–11 सिस्टम से लैस होने के बाद बॉर्डर पर तैनात चीनी सैनिकों की टुकड़ी और भी ताकतवर हो गई है। इसके बाद भारतीय सेनाओं को और सतर्क रहना होगा।

चीनी विशेषज्ञों के अनुसार, क्यूटीएस–11 सिस्टम उसी तरह से अत्याधुनिक है जैसा कि अमेरिकी सेना इस्तेमाल करती है।

चीनी सेना के एक्स्पर्ट सोंग झोनपिंग ने ग्लोबल टाइम्स को बताया, 'क्यूटीएस–11 को दुनिया का 'सबसे मजबूत फायरपावर' कहा जाता है। इसमें न सिर्फ फायर आर्म्स होते हैं, बल्कि पूरी तरह से डिजिटाइज्ड इंटीग्रेटेड इंडिविजुअल सोल्जर कॉम्बैट सिस्टम होता है। इनमें पहचान करने और संचार कर सकने की क्षमता भी शामिल है। इस सिस्टम में एक असाल्ट राइफल और 20 मिलीमीटर का ग्रेनेड लॉन्चर भी शामिल होता है।

यह सिस्टम करीब 7 किलो वजन का होता है। इस फोर्स के हर सैनिक को इस अत्याधुनिक सिस्टम के साथ ही थर्मल इमेजर, ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक और पोजिशनिंग सिस्टम्स से भी लैस किया जाता है। यह सिस्टम काफी महंगा है।

–दिनेश अग्रहरि
(https://aajtak.intoday.in)

लाख रुपए तक है एक भारतीय सैनिक की मौत का ईनाम

- **भारतीय सेना को काफी नुकसान पहुंचा रहे स्नाइपर शूटर**
- **अमेरिकी राइफलों का करते हैं उपयोग**

नई देहली, 23 फरवरी। सूत्रों का कहना है कि पाकिस्तान उत्तरी कश्मीर के केरन सेक्टर से जम्मू में पलांवाला तक नियंत्रण रेखा पर १५० से ज्यादा स्नाइपर शूटर तैनात कर दिए हैं। पिछले एक साल में इन स्नाइपर्स ने भारत को काफी नुकसान पहुंचाया है। स्नाइपर्स की इस टीम का नाम 'बैट' (बॉर्डर एक्शन टीम) रखा गया है।

पाकिस्तान इन स्नाइपर शूटरों की खास खातिरदारी करता है। इन्हें सैलरी देने के साथ एक भारतीय को गोली मारने के एवज में ईनाम भी देता है। ईनाम की राशि ५० हजार रुपए से लेकर एक लाख रुपए तक होती है। यह राशि भारतीय सेना के जवानों की रैंक के हिसाब से तय होती है। अगर कोई शूटर भारतीय सेना के किसी अफसर को निशाना बनाता है तो उसे अधिकतम ईनाम दिया जाता है।

(https://www.hindujagruti.org)

पाक : सार्वजनिक पद प्राप्त करने से पहले घोषित करनी होगी धार्मिक आस्था

पाकिस्तान के एक उच्च न्यायालय ने आज आदेश दिया कि किसी सार्वजनिक पद को संभालने जा रहे व्यक्ति को अपनी धार्मिक आस्था घोषित करनी चाहिए। इस आदेश को मुस्लिम बहुल पाकिस्तान में कट्टरपंथियों की बड़ी जीत माना जा रहा है। इस्लामाबाद उच्च न्यायालय के जज शौकत अजीज सिद्दीकी ने निर्वाचन कानून २०१७ में 'खत्म–ए–नबुव्वत' में विवादित बदलाव से जुडे एक केस में यह आदेश पारित किया।

'खत्म–ए–नबुव्वत' इस्लामी आस्था का मूल बिंदू है जिसका अर्थ यह है कि, मोहम्मद आखिरी पैगंबर हैं और उनके बाद कोई और पैगंबर नहीं होगा । जज ने कहा कि, यदि कोई पाकिस्तानी नागरिक सिविल सेवा, सशस्त्र बल या न्यायपालिका में शामिल होने जा रहा होता है तो उसके लिए अपनी आस्था के बाबत शपथ लेना अनिवार्य है । (10मार्च)

(https://www.hindujagruti.org)

पाकिस्तानी कलाकारों पर प्रतिबंध लगाने की मांग

मुंबई, 25 फरवरी। बॉलीवुड की फिल्म निर्माता परिषद ने हिंदी फिल्म उद्योग में पाकिस्तानी कलाकारों पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है। भारतीय फिल्म और टेलीविजन निर्माता परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुरेश अमीन ने संवाददाता सम्मेलन में हिन्दी फिल्मों में काम करने वाले पाकिस्तानी कलाकारों पर दो वर्ष का प्रतिबंध लगाने की मांग की।

(https://www.hindujagruti.org)

राजमाता जिजाऊ भोसले

जन्म एवं बचपन

इ.स. १५९५ में विदर्भ के सिंदखेड राजा में जिजाबाई का जन्म हुआ। वे लखोजीराजे जाधव की सुकन्या थी। सभी उन्हें प्रेम से 'जीजाबाई' कहते थे। यादव देवगिरी के सम्राट (राजा) थे। लखोजीराजे जाधव यादव राजा के वारिस थे। इसलिए वास्तव में जीजाबाई तो देवगिरी की राजकन्या ही थी परन्तु लखोजी राजे का तीनों सुपुत्रों के साथ निजाम की चाकरी में प्रवीण सरदार होने की बात जीजाबाई को सदैव खटकती थी ।

हिन्दुओं पर असीम अत्याचार करने वाले यवनों के विषय में बचपन से ही मन में भयंकर चिढ़ होना

महाराष्ट्र के ब्राह्मण 'श्राद्ध की पिण्ड कौन डालेगा ?' इनके बयानों का निवारण करने सुलतान के पास जाते थे। सुल्तान के सरदार द्वारा यहां के क्षत्रियों की औरतों को अगुवा किए जाने पर क्षत्रिय हाथ में रुमाल बांधकर सरदार के पास जाते थे एवं उन्हें रिश्वत देकर अपनी औरतों को मुक्त करा लाते थे । जहां ब्राह्मण एवं क्षत्रियों ने ही धर्म एवं पराक्रम का अनादर किया, वहां अन्य लोगों के सन्दर्भ में क्या कहना ?यवनों के अत्याचार से हिन्दू प्रजा को असहाय रूप से झुलसते देख जीजाबाई का रक्त खौल उठता था । हिन्दुओं पर असीम अत्याचार करनेवाले सुलतानी यवनों के विषय में उनके मन में बचपन से ही भयंकर चिढ़ थी ।

विवाह के उपरान्त ससुराल –मायके में उत्पन्न वैमनस्य जीजाबाई के राष्ट्र एवं धर्मप्रेम के कारण समाप्त हुआ !

कुछ कारण से जाधव एवं भोसले परिवार में उत्पन्न वैमनस्य समाप्त करने एवं यवनों से युद्ध कर हिन्दुओं का स्वराज्य स्थापित करने का जीजाबाई एवं शहाजी का मनोरथ रहना

आदिलशाही के सब में पराक्रमी सरदार शाहजी राजे भोसले के साथ जीजाबाई का विवाह हुआ एवं वे पुणे में रहने लगी। एक समारोह में अनेक मराठी सरदार एकत्रित हुए थे। उस समय खण्डागळे का हाथी अकस्मात भड़क कर हुडदंग मचाने लगा। सब भागदौड़ करने लगे। भागदौड़ में उन्मत्त हाथी के पांव के नीचे आनेवाले लोगों को बचाते समय कुछ लोगों के शस्त्रों से हाथी को चोट आई, जिससे जाधव एवं भोसले सरदारों में झगड़ा चरम सीमा पर पहुंच गया एवं तलवार से अत्यधिक मारपीट हुई।

प्रिय व्यक्तियों की मृत्यु से जीजाबाई एवं शाहजी को दुःख हुआ। दोनों कुलों में वैमनस्य आने पर भी इन दोनों में कभी दुराव एवं द्वेष नहीं उत्पन्न हुआ। जीजाबाई एवं शाहजी चाहते थे कि 'दोनों कुल भूतकाल के कटु प्रसंग तथा मान–अपमान भूल एक–दूसरे का वैमनस्य समाप्त कर संगठित हो यवनों से युद्ध करें एवं हिन्दुओं का स्वराज्य स्थापित करें' परन्तु स्वार्थी एवं अहंकारी मराठा सरदारों को इन दोनों के उच्च एवं व्यापक विचार अच्छे नहीं लगे ।

जीजाबाई का राष्ट्र एवं धर्मप्रेम से भरपूर प्रखर विचारों से पिता लखोजी राजे का अन्तर्मुख होना एवं शाहजी राजा से भेंट होने पर जाधव–भोसले में विद्यमान वैमनस्य स्थायी रूप से समाप्त होना

शाहजीराजा को पकड़ने हेतु निजाम ने लखोजी राजे जाधव को सैन्य के साथ जुन्नर भेजा था। गर्भवती होने के कारण जीजाबाई घोड़े पर सवार हो दौड़धूप कर पुणे तक पहुंचने में सक्षम नहीं थी। इसलिए शाहजीराजे जीजाबाई को जुन्नर के शिवनेरी किले में अपने समधी किलेदार श्री विश्वास राव एवं वैद्यराज निरगुडकर की सुरक्षा में रखकर पुणे गए। इसी कालावधि में लखोजीराजे जुन्नर पहुंचे। बहुत वर्षों के उपरान्त शिवनेरी किले पर पिता–पुत्री की भेंट

हुई।

जीजाबाई ने पिता से कहा, 'क्षुद्र स्वार्थ एवं अहंकार के लिए मराठे आपस में युद्ध करते हैं। आपस में युद्ध करने की अपेक्षा बाबाजी काटे से रायराव तक सभी पराक्रमी तलवारें एकत्रित हुईं, तो ये अपशगुनी विदेशी क्षणभर में ही समुद्र में डूब जाएंगे। विदेशियों की चाकरी में रहकर अपना जीवन निर्वाह करने का लज्जाजनक जीवन हम समाप्त करेंगे' उसके राष्ट्र एवं धर्मप्रेम से भरपूर प्रखर विचार पिताजी के अंतःकरण को स्पर्श कर गए। उसके प्राणों की तड़प एवं लगन को देखकर लखोजीराजे अन्तर्मुख हो गए। शिवनेरी की तलहटी पर पहुंचने तथा शाहजी राजाओं से भेंट होने पर वे शान्त हुए एवं जाधव–भोसले का वैमनस्य स्थायी रूप से समाप्त हुआ।

अनेक संकटों के आने से असीम मानसिक यातनाएं होने पर भी मन से दृढ़ रहकर निरन्तर अंतःकरण में प्रतिशोध की ज्वाला प्रज्वलित रखनेवाली जीजाबाई !

शहाजी राजा ने महाबत खान द्वारा अपहृत भाभी को मुक्त कराकर महाबत खान का वध करना–

मुगल सरदार महाबत खान ने दिनदहाड़े गोदावरी नदी के किनारे से गोदावरी बाई को अगुवा किया था । खेळोजी ने गोदावरी को (पत्नी को) बचाने के लिए कोई प्रयास नहीं किए परन्तु शहाजी राजा ने महाबतखान की छावनी से गोदावरी भाभी को त्वरित मुक्त कराया एवं कुछ समय के पश्चात् पता लगते ही पलायन महाबतखान की हत्या की ।

निजाम ने जीजाबाई के पिता एवं तीन भाईयों के साथ धोखा कर उनकी हत्या की

निजाम ने जीजाबाई के पिता लखोजी राजे जाधव एवं तीन भाईयों को दरबार में निःशस्त्र आमन्त्रित कर उनके साथ धोखा किया एवं उन्हें मार ड़ाला । यह दुःखद समाचार सुनकर जीजाबाई का हृदय विदीर्ण हो गया परन्तु मायका समाप्त होने पर भी उन्होंने स्वराज्य के विचार को नहीं छोड़ा ।

आदिलशाह के आदेश से रायराव द्वारा पुणे पर आक्रमण कर उसे उद्ध्वस्त करना

आदिलशाह के आदेश से सरदार रायराव ने शहाजीराजा के पुणे की सम्पत्ति पर, जमीन्दारी पर आक्रमण कर आगजनी की, जनता पर अत्याचार कर अनगिनत लोगों की हत्याएं कीं तथा खेती एवं घरद्वार उद्ध्वस्त किए । इस पुण्यभूमि पर गधे का हल चलाया।

हृदय द्रवित करनेवाली इन घटनाओं के कारण शिवनेरी पर निवास करनेवाली जिजाऊ के मन पर एक के पीछे एक दुःख के पर्वत आघात कर रहे थे । अत्यन्त मानसिक यातनाएं होने से उनका जीना दूभर हो गया । तब भी उन्होंने स्वयं को सम्भालकर मन को दृढ़ किया एवं अन्तःकरण में प्रतिशोध की ज्वाला को निरन्तर प्रज्ज्वलित रखा ।

शिवाजी राजा के जन्म से पूर्व जीजाबाई द्वारा की गई प्रार्थना एवं उन्हें लगे दोहद

भवानीमाता को की गई प्रार्थनाएं

जीजाबाई द्रवित होकर भवानीमाता को आर्तता से निरन्तर इस प्रकार प्रार्थना कर रही थी, 'दुष्टों का निर्दालन करने हेतु, राष्ट्र एवं धर्म की रक्षा हेतु प्रभु श्रीराम के समान वीर सुपुत्र दें' अथवा 'अष्टभुजाधारिणी श्री दुर्गामाता के समान निर्दालन करनेवाली रणरागिनी दें।'

लगे हुए दोहद

जीजाबाई को बाघ पर सवार होकर हाथ में तलवार लेकर शत्रु के साथ युद्ध करना प्रतीत हो रहा था। उन्हें निरन्तर युद्ध एवं रामराज्य की स्थापना के सपने आते थे ।

देवी–देवताओं की कथाओं के माध्यम से राष्ट्र एवं धर्मभक्ति की घूंटी पिलाकर बाल शिवाजी को सिद्ध करनेवाली जीजाबाई !

वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया (इ. स. १६२७) को शिवनेरी किले पर शिवाजी राजा का जन्म हुआ। बाल शिवाजी पर राष्ट्र एवं धर्म के संस्कार होने हेतु जीजाबाई ने उन्हें बचपन से ही प्रभु श्रीराम, हनुमान, श्रीकृष्ण इत्यादि देवी–देवताओं तथा महाभारत एवं रामायण की कथाएं बताईं। इन कथाओं के माध्यम से जीजाबाई ने उन्हें राष्ट्र एवं धर्म भक्ति की घूंटी पिलाकर आदर्श राजा बनने हेतु सिद्ध किया। जीजाबाई शिवाजी की केवल माता नहीं, अपितु प्रेरक शक्ति भी थी।

व्यष्टि जीवन की गुण विशेषताएं

कठोर धर्माचरण के पुण्यबल से धैर्य के साथ अनगिनत संकटों का सामना करने का बल मिलना

शिवाजी राजा के साथ रहने हेतु पुणे जाने के पश्चात् उन्होंने कसबा पेठ में भगवान श्री गणपति की स्थापना की एवं ताम्बडी जोगेश्वरी एवं केदारेश्वर मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया । उन्हें देवदर्शन करना, सन्तों के भजन–कीर्तन सुनना एवं संस्कृत धर्मग्रंथों का ज्ञान ग्रहण करना प्रिय था। उन्होंने मन से व्रत–वैकल्य, कुलधर्म, पातिव्रत्य एवं मातृधर्म का पालन किया। यद्यपि वे धार्मिक थी परन्तु कर्मकाण्ड में नहीं फंसी थीं। उन्होंने अपने कठोर धर्माचरण से बहुत पुण्य संचय किया था। इसलिए उन्होंने धैर्य के साथ अनगिनत संकटों का सामना किया।

भगवान पर दृढ़ आस्था रहने से सफलता का अनुभव होना

उनकी निश्चित/दृढ़ आस्था थी कि मां भवानी एवं शम्भू महादेव हमारे आधार हैं। इसलिए वे सदैव पराक्रमी पति एवं पुत्र के समर्थन में निर्भयता एवं ढता से खड़ी रहती थीं। पति अथवा पुत्र के सामने आनेवाले प्राणांतिक संकटों में उनकी रक्षा हेतु द्रवित मन से रात–दिन निरन्तर प्रार्थना करती थीं एवं उनकी मुक्ति के लिए भवानीमाता को संकट में (साकडे) डालती थीं। उन्होंने अनेक बार ऐसा अनुभव किया था कि भगवान पर आस्था रखकर प्रयास करने से सफलता मिलती है।

सर्वार्थ से आदर्श हिन्दू नारी रहना

जीजाबाई ने धर्मशास्त्र में हिन्दू

उन्होंने मन से व्रत–वैकल्य, कुलधर्म, पातिव्रत्य एवं मातृधर्म का पालन किया। यद्यपि वे धार्मिक थी परन्तु कर्मकाण्ड में नहीं फंसी थीं। उन्होंने अपने कठोर धर्माचरण से बहुत पुण्य संचय किया था। इसलिए उन्होंने धैर्य के साथ अनगिनत संकटों का सामना किया।

अल्पसंख्यक पत्रकारों को ६१ हजार रुपये की मीडिया किट बांटेगी कर्नाटक सरकार

बेंगलुरु : कर्नाटक में चुनाव से पहले पत्रकारों को लुभाने के लिए राज्य सरकार ने मीडियाकर्मियों के लिए एक बड़ी घोषणा की है। राज्य की सिद्धारमैया सरकार के द्वारा कर्नाटक के अल्पसंख्यक पत्रकारों को लुभाने के लिए उन्हें विशेष मीडिया किट देने की घोषणा की गई है।

जानकारी के अनुसार, कर्नाटक की राज्य सरकार के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा एक आदेश जारी करते हुए राज्य के सभी मान्यता प्राप्त अल्पसंख्यक पत्रकारों को विशेष मीडिया किट देने की घोषणा की है।

बताया जा रहा है कि सरकार की ओर से दी जाने वाली इस किट में लैपटॉप, हैंडी कैमरा और स्टिल फोटोग्राफी के लिए डिजिटल कैमरा मौजूद होगा, जिसे जल्द ही पत्रकारों के बीच बांटा जाएगा। सरकार की ओर से पत्रकारों को दी जाने वाले इस किट की कुल कीमत ६१७५० रुपये बताई जा रही है।

(नवभारत टाइम्स, 13 मार्च)

अलग धर्म की मान्यता के बाद अब लिंगायत को अल्पसंख्यक का दर्जा देने की घोषणा

कर्नाटक में सरकार ने एक बार फिर बड़ा दांव खेला है। लिंगायत को अलग धर्म की मान्यता के बाद अब इसे अल्पसंख्यक का भी दर्जा दिए जाने की घोषणा की गई है। विधानसभा चुनाव से पहले सियासत का हर दांव कर्नाटक में खेलना कांग्रेस व बीजेपी की मजबूरी बन गई है। बीजेपी के लगातार निशाने पर रहने के बाद सीएम सिद्धारमैया ने लिंगायत समुदाय के लोगों को अलग धर्म का दर्जा देने के सुझाव को मंजूरी कुछ दिन पहले दी थी। अब लिंगायत धर्म को सरकार ने अल्पसंख्यक का दर्जा देने की घोषणा की है।

(पंजाब केसरी, 23 मार्च)

पृष्ठ 07 का शेषांश....

बैठक के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में रिजवी ने कहा कि बैंकों में अल्पसंख्यकों के लिए अलग काउंटर बनाने का सुझाव आया है। इसके लिए आयोग अल्पसंख्यक मंत्रालय को पत्र लिखेगा और अगर यह ठीक लगा तो यह सिफारिश वित्त मंत्रालय से भी की जाएगी। (नवभारत टाइम्स, 20 मार्च)

अल्पसंख्यकवाद देश के लिए घातक, सभी को मिलें समान अधिकार : विहिप

नई दिल्ली, 20 मार्च। अल्पसंख्यक वाद देश के लिए घातक है. लिंगायत समुदाय को बृहद हिन्दू समाज से अलग करने के कर्नाटक काँग्रेस के निर्णय को विश्व हिन्दू परिषद ने चुनाव पूर्व विभाजन से वोट प्राप्त करने के षडयंत्र की संज्ञा देते हुए अल्पसंख्यकवाद को देश विरोधी कृत्य बताया है। विहिप के अंतरराष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ सुरेंद्र जैन ने कहा कि हम सभी को समान

अधिकार के पक्षधर हैं। भारत में कोई अल्पसंख्यक –बहुसंख्यक नहीं. बल्कि सभी केवल भारत माता की संतानें हैं।

विहिप संयुक्त महामंत्री ने कहा कि कर्नाटक में कांग्रेस द्वारा चुनाव की पूर्व संध्या पर लिंगायत को अलग करने के निर्णय के पीछे भी वही विभाजन से वोट प्राप्त करने की उसकी पुरानी षड्यंत्रकारी मानसिकता है। पिछले आम चुनाव से पूर्व भी उसने जैन समाज को अलग करने का प्रयास किया और कैबिनेट निर्णय से पूर्व राहुल गांधी ने इसकी घोषणा कर दी थी किन्तु, उसे मुंह की खानी पड़ी, अब भी खाएँगे।

विहिप का स्पष्ट मत है कि जो अधिकार अल्पसंख्यकों के हैं वे बहुसंख्यकों को भी मिलने ही चाहिए।

प्रस्तुति – विनोद बंसल

नारी के लिए बताए गए सभी कर्त्तव्य भली–भांति निभाकर कन्या, बहन, पत्नी, बहू, जेठानी, माता, सास एवं नानी–दादी ऐसे सभी पारिवारिक सम्बन्धों को उत्तम पद्धति से मर्यादित रखा। सभी परिवारजनों को वे प्रिय एवं आदरणीय थी। सभी को उनका आधार प्रतीत होता था। वे सर्वार्थ से आदर्श हिन्दू नारी थी। समस्त हिन्दुओं को राजमाता जीजाबाई देने के लिए हम भगवान के चरणों में तज्ञ हैं। 'उनके समान आदर्श हिन्दू नारी बनने की प्रेरणा सभी हिन्दू स्त्रियों में जागृत हो', ऐसी श्री भवानीदेवी एवं शम्भू महादेव के चरणों में प्रार्थना है।

समष्टि जीवन की आदर्श राजमाता !

युद्ध कला में कुशल रहना

घोड़े पर सवार होकर गति से दौड़ते हुए युद्ध करने एवं सहजता से तलवारबाजी करने की युद्धकला में जीजाबाई कुशल थी।

पराक्रमी रणरागिनी

सिद्दी जोहर से युद्ध कर पन्हाळ के किले का घेरा मोड़कर शिवाजी महाराज को मुक्त कर लाने हेतु जीजाबाई कमर में तलवार बान्धकर युद्ध के लिए सिद्ध हुई थी ।

शिवाजी राजा को क्रूरकर्मी अफजलखान को निर्भयता से नष्ट करने का आदेश देना :

कनगगिरी के उपक्रम में अफजलखान ने जीजाबाई के ज्येष्ठ पुत्र संभाजी राजे को तोप चलाकर षडयन्त्र से मारा। शिवाजी महाराज को नष्ट करने हेतु अफजल खान प्रचण्ड सैन्य के साथ आगजनी, मूर्तिभंजन, हत्याकाण्ड इत्यादि आसुरी अत्याचार करते हुए राजगढ़ की दिशा में गति से आ रहा था।

क्रमशः

एफसीआरए जांच के दायरे में सोनिया गांधी के ट्रस्ट समेत ४२ संगठन

नई दिल्ली : ओलिंपिक मेडलिस्ट और राज्यसभा सांसद मैरी कॉम द्वारा स्थापित NGO, सोनिया गांधी के नेतृत्व वाले राजीव गांधी चैरिटेबल ट्रस्ट, IT इंडस्ट्री से जुड़ा संगठन नैस्कॉम और एमनेस्टी इंटरनैशनल की भारतीय शाखा समेत 42 गैरसरकारी संगठनों (NGO) की जांच की जा रही है। विदेशी चंदा लेने में कथित अनियमितताओं को लेकर गृह मंत्रालय इन संगठनों की जांच कर रहा है।

लोकसभा में एक सवाल के लिखित जवाब में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री किरण रिजिजू ने बताया कि FCRA (फॉरन कॉन्ट्रिब्यूशन्स रेगुलेशन ऐक्ट) या FCRR (फॉरन कॉन्ट्रिब्यूशन्स रेगुलेशन रूल्स) के कथित उल्लंघन की प्राथमिक जांच के तौर पर 21 NGOs को एक स्टैंडर्ड प्रश्नावली दी गई है। इसी तरह के कथित उल्लंघनों के लिए 21 अन्य संगठनों का ऑडिट और जांच कराई जा रही है।

बेंगलुरू स्थित सेंटर फॉर इंटरनेट ऐंड सोसाइटी को भी यह प्रश्नावली दी गई है, जिसने पिछले साल आधार के डेटाबेस में बड़े पैमाने पर लीक्स का दावा किया था। जांच के दायरे में राजीव गांधी चैरिटेबल ट्रस्ट, जिसे बिल ऐंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन से अच्छी धनराशि मिलती है और पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया (इसका FCRA लाइसेंस पिछले साल रद्द कर दिया गया था), एशियानेट न्यू चौरिटेबल ट्रस्ट और मैरी कॉम का बॉक्सिंग ट्रेनिंग स्कूल भी शामिल है।

स्टैंडर्ड प्रश्नावली में 32 सवाल पूछे गए हैं, जिससे यह जांच की जा सके कि FCRA के नियमों का उल्लंघन तो नहीं हुआ है? गौरतलब है कि इस तरह के उल्लंघनों की बात सबसे पहले

प्रतीकात्मक चित्र

जिलाधिकारी या खुफिया एजेंसियों के संज्ञान में आई थी। अगर इन संगठनों के जवाब को संतोषजनक नहीं पाया जाता है तो FCRA अकाउंट का ऑडिट कराने के साथ ही इनके बुक्स और परिसर की भी जांच की जा सकती है।

PHFI, नैस्कॉम और अरुणाचल व केरल में स्थित ईसाई संगठनों के ऑडिट और जांच की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। उधर, नैस्कॉम के CEO श्रीकांत सिन्हा ने हमारे सहयोगी अखबार टाइम्स ऑफ इंडिया को बताया कि सरकार ने जनवरी 2018 में एक 'रूटीन' FCRA ऑडिट कराया है। ऑडिट के बाद फाउंडेशन को आज तक मंत्रालय की ओर से किसी प्रकार का नोटिस नहीं मिला है।

(नवभाटा, 20 मार्च)

नेशनल हेराल्ड केस : सोनिया और राहुल की कंपनी को १० करोड़ रूपए जमा करने का आदेश

नई दिल्ली : कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी और यूपीए की चेयरपर्सन सोनिया गांधी को दिल्ली हाईकोर्ट से तगड़ा झटका लगा है। कोर्ट ने यंग इंडियन प्राइवेट लिमिटेड (वाईआई) को 249.15 करोड़ रुपए के आयकर मामले में 10 करोड़ रुपए जमा करने का आदेश दिया है। इस कंपनी के अधिकांश शेयर राहुल गांधी और उनकी मां सोनिया गांधी के पास हैं।

कंपनी पर बकाया है 249.15 करोड़ रुपए दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस एस. रवींद्र भट्ट और जस्टिस ए. के. चावला की पीठ ने 31 मार्च से पहले आयकर विभाग को आधी रकम और बाकी राशि 15 अप्रैल तक जमा करने को

कहा है। कोर्ट ने आयकर विभाग को निर्देश दिया कि वह 249.15 करोड़ रुपए की मांग पर दबाव न बनाए। कोर्ट ने याचिका पर आयकर विभाग से जवाब मांगा और मामले की अगली सुनवाई 24 अप्रैल तय कर दी।

वाईआई ने चैरिटेबल संस्था की दी दलील

कंपनी ने अदालत से समीक्षा वर्ष 2011–12 के लिए आयकर अधिनियम की धारा 156 के तहत 249.15 करोड़ रुपए की कर और ब्याज वसूली के लिए 27 दिसंबर को जारी की गई नोटिस पर रोक लगाने का अनुरोध किया था। कंपनी ने कहा कि वह एक चैरिटेबल संस्था है और इसकी कोई आय नहीं है और आयकर विभाग ने गलत तरीके से समीक्षा वर्ष 2011–12 के लिए 249 करोड़ रुपए की मांग की है।

सुब्रमण्यन स्वामी ने की थी शिकायत

बीजेपी नेता सुब्रमण्यन स्वामी ने वाईआई द्वारा एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) के अधिग्रहण में धोखाधड़ी की शिकायत दर्ज कराई थी। स्वामी ने कांग्रेस पर एजेएल के अधिग्रहण के लिए यंग इंडिया लिमिटेड को प्रतिभूति रहित ऋण देने का आरोप लगाया है। एजेएल नेशनल हेराल्ड का प्रकाशन करने वाली कंपनी थी। वाईआई कंपनी में सोनिया गांधी व राहुल गांधी के पास 38–38 फीसदी हिस्सेदारी है।

आईएसटी, 19 मार्च

विहिप की रामराज्य रथयात्रा : तीन सौ लोगों पर एफआईआर...

तमिलनाडु पुलिस ने अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के लिए समर्थन जुटाने की खातिर आयोजित की जा रही रामराज्य रथ यात्रा में शामिल 300 लोगों पर एफआईआर दर्ज किया है। पुलिस ने 50 मोटरसाइकिलें भी जब्त कर ली है। यह यात्रा मंगलवार (20) मार्च को तमिलनाडु में प्रवेश की थी। पुलिस ने इन लोगों पर आम जनजीवन में बाधा डालने का आरोप लगाया है। इस यात्रा का आयोजन विश्व हिन्दू परिषद के समर्थन से किया जा रहा है। तमिलनाडु में डीएमके समेत कुछ मुस्लिम संगठनों ने इस यात्रा का विरोध किया था। विरोधी पार्टियां दावा कर रही हैं कि यात्रा से सांप्रदायिक सद्भाव प्रभावित होगा। 21 मार्च को यात्रा के खिलाफ विरोध करने पर विपक्ष के नेता एम के स्टालिन समेत 75 विधायकों के खिलाफ केस दर्ज किया गया था। वहीं मुख्यमंत्री के पलानीस्वामी ने यह कहते हुए यात्रा को मंजूरी देने के फैसले का बचाव किया था कि सभी धर्मों को समान अधिकार मिले हुए हैं और विपक्ष इसे राजनीतिक रंग देने की कोशिश कर रहा है। पुलिस ने जिन लोगों पर एफआईआर दर्ज किया है वे लोग वीएचपी, हिन्दू मुन्नानी और दूसरे संगठनों से जुड़े हुए हैं। पुलिस के इस कदम को मुख्यमंत्री पलानीस्वामी द्वारा बैलेंस बनाने की कवायद बताया जा रहा है। (जनसत्ता, 24 मार्च)

मेरठ में होली मिलन समारोह

ग्वालियर में रामायण मेला

6 मार्च को गुजरात के वडोदरा महानगर में डॉ0 प्रवीणभाई तोगड़िया की सोशल मीडिया के विषय पर कार्यकर्ताओं की बैठक का आयोजन किया गया। भव्य आतिशबाजी के साथ डॉ0 साहब का स्वागत हुआ। देर रात्रि होने के बावजूद बड़ी संख्या में कार्यकर्ता और विविध संगठनों के लोग उपस्थित रहे।

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/2018-20
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
मुद्रण- तिथि : 28.03.18
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की
असंगठित श्रमिकों के लिये ऐतिहासिक योजनाएं

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

श्रमिकों का पंजीयन
1 अप्रैल से
7 अप्रैल तक
पंजीयन अवश्य करायें

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

असंगठित श्रमिक कौन?

कृषि मजदूर, लघु एवं सीमान्त कृषक, घरेलू श्रमिक, फेरी लगाने वाले, दुग्ध श्रमिक, मछली पालन श्रमिक, पत्थर तोड़ने वाले, पक्की ईंट बनाने वाले, गोदामों में काम करने वाले, मोटर परिवहन, हाथकरघा, पावरलूम, रंगाई-छपाई, सिलाई, अगरबत्ती बनाने वाले, चमड़े की वस्तुएँ और जूते बनाने वाले चर्मकार, ऑटो-रिक्शा चालक, आटा, तेल, दाल तथा चावल मिलों में काम करने वाले, लकड़ी का काम करने वाले, बर्तन बनाने वाले, कारीगर, लुहार, बढ़ई फर्नीचर तथा माचिस एवं आतिशबाजी उद्योग में लगे श्रमिक, प्लास्टिक उद्योग, निजी सुरक्षा एजेन्सी में काम करने वाले, कचरा बीनने वाले, सफाई कर्मी, हम्माल-तुलावटी, गृह उद्योग में नियोजित श्रमिक।

- श्रमिकों को 200 रुपये मासिक फ्लैट रेट पर बिजली।
- गर्भवती श्रमिक महिलाओं को पोषण आहार के लिये 4 हजार रुपये। प्रसव होने पर महिला के खाते में 12 हजार 500 रुपये जमा किये जायेंगे।
- घर के मुखिया श्रमिक की सामान्य मृत्यु पर परिवार को दो लाख तथा दुर्घटना में मृत्यु पर 4 लाख रुपये की सहायता।
- हर भूमिहीन श्रमिक को भूखण्ड या मकान।
- स्वरोजगार के लिए ऋण।
- साइकिल-रिक्शा चलाने वालों को ई-रिक्शा और हाथठेला चलाने वालों को ई-लोडर का मालिक बनाने की पहल। बैंक ऋण की सुविधा 5 प्रतिशत ब्याज अनुदान के साथ 30 हजार की सब्सिडी दी जायेगी।
- श्रमिक को मृत्यु पर अंतिम संस्कार के लिये पंचायत/नगरीय निकाय से 5 हजार रुपये की नगद सहायता।
- श्रमिकों के कल्याण की और भी अनेक योजनाएँ।

आर्थिक असुरक्षा से जूझते असंगठित श्रमिक बहनों, भाइयों की बेहतरी के लिए हम संकल्पित हैं। उन्हें आर्थिक विकास के साथ ही सामाजिक बेहतरी, उनके बच्चों को बेहतर शिक्षा तथा अन्य सुविधाएं देने के लिए योजनाओं पर प्रभावी अमल किया जा रहा है।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

ग्राम पंचायत एवं नगरीय निकाय में
पंजीयन करवाएं और योजनाओं का लाभ उठाएं

D83154

पोर्टल shramsewa.mp.gov.in

अधिक जानकारी के लिए आयुक्त/मुख्य नगरपालिका अधिकारी, नगरीय निकाय तथा मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत से सम्पर्क करें।

असंगठित श्रमिक का कल्याण, प्रगति के अवसर मिलें समान

/CMMadhyaPradesh
/CMMadhyaPradesh

प्रकाशक व मुद्रक परमानन्द मनोहर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'साइबर क्रिएशन्स' जे.ई.-9, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित। सम्पादक : मानवेन्द्र नाथ पंकज